महासभा सदस्यता अभियान की तिथि 31 जुलाई तक

02

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 30 अंक 25 कुल पृष्ठ 12 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 29 अप्रैल 2024, वीर नि. संवत् 2550

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

❍ आत्मा की सबसे बड़ी गलती अपने असली रूप को न पहचान पाना है, अपने असली रूप की पहचान केवल आत्म ज्ञान प्राप्त करने के बाद ही हो सकती है।

❍ व्यक्ति की आत्मा ही उसकी शत्रु होती है, आपका असली शत्रु आपके भीतर ही है जो कि क्रोध, घमंड, लालच, आसक्ति और नफरत है।

❍ जैसे आग को ईंधन से नहीं बुझाया जा सकता बिल्कुल उसी प्रकार जीवित व्यक्ति तीनों लोकों की सारी धन दौलत पाकर भी संतुष्ट नहीं हो सकता।

-भगवान महावीर

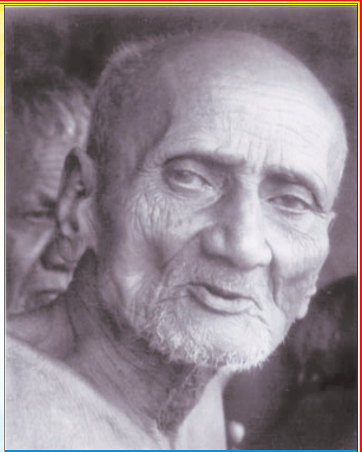

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने किया

भ. महावीर 2550वां निर्वाण महोत्सव समारोह का उद्घाटन

आयोजन में श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज जैन गंगवाल प्रधानमंत्री जी को भ. महावीर स्वामी का स्मृति चिन्ह भेंट कर अभिनंदन करते हुये

''वर्तमान में वर्धमान की जरूरत है। आज भगवान महावीर के उपदेशों की सम्पूर्ण मानव समाज को अत्यधिक आवश्यकता है। विश्व की समस्याओं का निदान भगवान महावीर के शांति और अहिंसा के उपदेश से ही संभव है।'' उक्त बातें प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम में भगवान महावीर के जन्म कल्याणक समारोह के उद्घाटन समारोह के शुभ अवसर पर 2550वें भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव का उद्घाटन करते हुये कहीं। प्रधान मंत्री ने इस अवसर पर एक स्मारक डाक टिकट तथा यादगार 100 रुपये का सिक्का भी जारी। गरिमामय विमोचन समारोह में केन्द्रीय कानून मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल तथा संस्कृति राज्य मंत्री श्रीमती मीनाक्षी लेखी भी थीं।

आयोजन में उपस्थित सर्व श्री गजराज जैन गंगवाल, अशोक पाटनी आर. के. मार्बल, प्रकाशचन्द्र बड़जात्या, डॉ. निर्मल कुमार जैन, विकास जैन आदि

स्वराज जैन, टाइम्स ऑफ इण्डिया

दिल्ली, 21 अप्रैल। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भगवान महावीर जन्म कल्याणक समारोह के शुभ अवसर पर 2550वें भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव का उद्घाटन किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि 'आज संघर्षों में फंसी दुनिया भारत से शांति की अपेक्षा कर रही है। नए भारत की इस नई भूमिका का श्रेय हमारे बढ़ते सामर्थ्य और विदेश नीति को दिया जा रहा है लेकिन इसमें हमारी सांस्कृतिक छवि का बहुत बड़ा योगदान है। आज भारत इस भूमिका में आया है, क्योंकि आज हम सत्य और अहिंसा

डाक टिकट तथा सिक्कों का भी हुआ विमोचन

जैसे व्रतों को वैश्विक मंचों पर पूरे आत्मविश्वास से रखते हैं, इसीलिए आज विरोधों में भी बंटे विश्व के लिए भारत 'विश्व-बंधु' के रूप में अपनी जगह बना रहा है। स्कूली बच्चों द्वारा भगवान महावीर स्वामी पर प्रस्तुत नृत्य नाटिका 'वर्तमान में वर्धमान' का जिक्र करते हुए पीएम ने कहा कि भगवान महावीर के मूल्यों के प्रति युवाओं का समर्पण देश के सही दिशा में आगे बढ़ने का संकेत है।

अन्य चित्र एवं शेष पृष्ठ 2 पर.......

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर

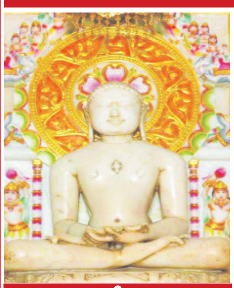

869 साल प्राचीन मूलनायक श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा

शांतिधारा का प्रसारण

LIVE

आरती : 7:15 - 7:45 AM

शांतिधारा : 8:30 AM

@jainmandirhasteda

नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:

अमित शर्मा (Manager)-9783016885

नामांकित शांतिधारा के लिए किसी भी राशि का आग्रह नहीं है।

हस्तेड़ा जैन मंदिर दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.

संपर्क सूत्र:

नितिन कुमार पाटनी (मंत्री) 9001255955

मनीष जी गंगवाल (कोषाध्यक्ष) 095880-20330

शेष पृष्ठ 01 का.........

प्रधानमंत्री ने जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए मिशन लाइफ और एक विश्व, एक सूर्य, एक ग्रिड के रोडमैप के साथ एक पृथ्वी, एक परिवार और एक भविष्य के दृष्टिकोण जैसी भारतीय पहलों का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि वैश्विक संघर्षों के समय में तीर्थंकरों, श्रद्धेय आध्यात्मिक जैन गुरुओं की शिक्षाएं और भी अधिक प्रासंगिक हैं। उन्होंने कहा कि हम 2500 वर्षों के बाद भी भगवान महावीर का निर्वाण दिवस मना रहे हैं और मुझे यकीन है कि देश आने वाले हजारों वर्षों तक भगवान महावीर के मूल्यों का जश्न मनाता रहेगा। उन्होंने पूर्ववती संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए) सरकार पर कटाक्ष करते हुए कहा कि उनकी सरकार ने 2014 में सत्ता में आने पर ऐसे समय में विरासत के साथ-साथ भौतिक विकास को बढ़ावा देने पर जोर दिया जब देश निराशा में डूबा हुआ था। उन्होंने अपनी सरकार द्वारा योग और आयुर्वेद जैसी भारतीय विरासत को बढ़ावा दिए जाने का जिक्र करते हुए कहा कि देश की नई पीढ़ी अब मानती है कि स्वाभिमान ही उसकी पहचान है। प्रधानमंत्री ने भगवान महावीर की शिक्षाओं का पालन करने को कहा क्योंकि इन मूल्यों को पुनर्जीवित करना आज समय की मांग है। उन्होंने कहा कि 'जैन धर्म का अर्थ ही है जिन का मार्ग, यानी जीतने वाले का मार्ग। हम कभी दूसरे देशों को जीतने के लिए आक्रमण करने नहीं आए। हमने स्वयं में सुधार करके अपनी कमियों पर विजय पाई है। इसलिए मुश्किल से मुश्किल दौर आए लेकिन हर दौर में कोई न कोई ऋषि, मनीषी हमारे मार्गदर्शन के लिए प्रकट हुए।' राष्ट्रसंत परम्पराचार्य श्री प्रज्ञ सागर जी मुनिराज ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को भगवान महावीर वाणी संग्रह कृति एवं आचार्य श्री विद्यानन्द जी मुनिराज की शताब्दी जन्म जयन्ती का लोगो (स्मृति चिन्ह) भेंट किया। परम्पराचार्य श्री प्रज्ञसागर जी ने अपने संबोधन में कहा कि प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में नव्य भारत सदाचार की नई वर्णमाला लिख रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत भ्रष्टाचार और निराशा के दौर से उबर रहा है क्योंकि 25 करोड़ से अधिक भारतीय गरीबी से बाहर आ गए हैं। उन्होंने कहा कि केवल 10 साल पहले ही हमारे देश में कैसा माहौल था, यह सबको पता है। चारों तरफ निराशा, हताशा और ये मान लिया गया था कि इस देश का कुछ नहीं हो सकता। भारत में ये निराशा भारतीय संस्कृति के लिए भी उतनी ही परेशान करने वाली बात थी। इसलिए 2014 के बाद हमने भौतिक विकास के साथ ही विरासत पर गर्व का संकल्प भी लिया। आज हम भगवान महावीर का 2550वां निर्वाण महोत्सव मना रहे हैं। आज देश की नई पीढ़ी को ये विश्वास हो गया है कि हमारी पहचान हमारा स्वाभिमान है। जब राष्ट्र में स्वाभिमान का ये भाव जाग जाता है तो उसे रोकना असंभव हो जाता है। भारत की प्रगति इसका प्रमाण है। इस मौके पर उपाध्याय श्री रवींद्र मुनिजी ने कहा कि महावीर का दर्शन युगों-युगों तक विश्व का मार्गदर्शन करेगा। साध्वी सुलक्षणा श्री ने कहा कि जगत कल्याण के लिए निकले महावीर ने महिला सशक्तिकरण कर उन्हें समता का अधिकार दिया। साध्वी अणिमाश्री ने कहा कि महावीर मानवता के महानायक थे। भगवान महावीर मेमोरियल समिति के अध्यक्ष कन्हैया लाल पटावरी ने पी एम को शाल ओढ़ाकर व श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं भगवान महावीर 2550वां निर्वाण महोत्सव समिति के अध्यक्ष गजराज जैन गंगवाल ने भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा भेंट कर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का स्वागत किया। इस भव्य समारोह का आयोजन भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय तथा भगवान महावीर 2550वां निर्वाण महोत्सव समिति एवं भगवान महावीर मेमोरियल समिति के संयुक्त तत्वावधान में संयोजन किया गया था।

आवश्यक सूचना

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा नवीन सदस्यता अभियान की अवधि 31 जुलाई 2024 तक

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा की दिनांक 11 फरवरी 2024 को कोर कमेटी की बैठक में यह निर्णय लिया गया था कि महासभा को सुसंगठित करने हेतु नवीन सदस्यता अभियान के तहत एक लाख नये सदस्य 31 मार्च 2024 तक बनाये जायेंगे, लेकिन महासभा के अनेक सदस्यों ने अनुरोध किया है कि नवीन सदस्यता अभियान की समय सीमा 31 मार्च 2024 से बढ़ाई जाय क्योंकि तब तक वांछित लक्ष्य पूरा करना मुश्किल है। अतः महासभा की सदस्यता विकास उप समिति ने उपरोक्त संदर्भ में यह निर्णय लिया है कि नवीन सदस्यता अभियान की समय सीमा 31 मार्च 2024 से बढ़ाकर 31 जुलाई 2024 तक किया जाय। अब श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा की नवीन सदस्यता अभियान की समय सीमा 31 जुलाई 2024 हो गई है। महासभा के समस्त पदाधिकारियों और सदस्यों से अनुरोध है कि 31 जुलाई 2024 तक महासभा के अधिकाधिक सदस्य बनाकर वांछित लक्ष्य पूरा करने में अपना सहयोग प्रदान करें। सादर,

- प्रकाशचन्द्र जैन बड़जात्या
राष्ट्रीय महामंत्री- श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

श्री भारतवर्षीय दिग. जैन युवा महासभा म. प्र. का महावीर जन्म कल्याणक पर भव्य कार्यक्रम

जैन टी के वेद, इन्दौर
केन्द्रीय राष्ट्रीय उपाध्यक्ष महासभा

श्रमण संस्कृति के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के 2623 वें जन्मकल्याणक के अवसर पर परंपरागत स्वर्ण रथ के साथ कांच मंदिर से निकलने वाली भगवान महावीर स्वामी की ऐतिहासिक शोभा यात्रा बड़े ही धूमधाम और उल्लास के साथ आचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी एवं मुनि श्री पूज्यसागर जी के सानिध्य में कांच मंदिर से राजवाड़ा होते हुए पुनः कांच मंदिर पहुंची। यात्रा मार्ग में इंदौर के हृदय स्थल राजबाड़ा पर दिगंबर जैन समाज सामाजिक संसद युवा प्रकोष्ठ एवं श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा महासभा के संयुक्त तत्वाधान में भव्य मंच लगाकर परंपरागत जुलूस का ऐतिहासिक स्वागत किया गया। आयोजन के प्रमुख दिगंबर जैन समाज सामाजिक संसद युवा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष महावीर जैन एवं श्री भारतवर्षीय दिग. जैन महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष तेज कुमार वेद एवं श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा महासभा के प्रदेश अध्यक्ष चिंतन जैन ने विस्तार पूर्वक बताया कि जुलूस में जैन समाज के हजारों धर्मानुरागी परिवार भगवान महावीर के ऐतिहासिक जुलूस में शामिल हुए। लगभग 123 मंदिरों की झांकियां व अलग-अलग मंडल भगवान महावीर की भक्ति में झूमते गाते नजर आए, सभी ने भगवान महावीर के सिद्धांतों को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य किया। अहिंसा परमो धर्मः जियो और जीने दो, त्रिशलानदन वीर की जय बोलो महावीर की, के नारों से पूरा क्षेत्र गुंजायमान हो गया। शोभायात्रा में अलग-अलग मंदिरों से पधारे प्रमुख श्रेष्ठीजनों का मंच से शाल, दुपट्टा एवं पगड़ी पहनाकर ऐतिहासिक स्वागत किया गया। स्वागत की बेला में जुलूस मार्ग पर अपना एक अलग माहौल बनाया जिसे सभी ने बेहद पसंद किया। मंच से समाज के लगभग सभी श्रेष्ठीजनों का सम्मान किया गया, विशेष रूप से नरेंद्र वेद, नकुल पाटोदी, पिंकेश टोंग्या, राकेश विनायका, सुभाष सांमरिया, पार्षद राजीव जैन, टीनू जैन, अखिलेश शाह, भारतीय जनता पार्टी के सांसद प्रत्याशी शंकर जी लालवानी, विजय बड़जात्या, हंसमुख गांधी, लाभचंद काला, सुशील काला, संजय डोसी, राजेश जैन के साथ-साथ सैकड़ों विभूतियों का सम्मान किया गया।

इस अवसर पर विशेष रूप से राहुल झाँझरी, रोमिल काला, मोहित जैन, विशाल काला, गजेंद्र जैन, गौतम काला, बहार जैन, हनी जैन, मनीष जैन, ऋषभ अजमेरा, रोमिल जैन, अर्पित जैन, पारस जैन, दिलीप अजमेरा, अनिल जैन, सावन जैन, मनीष पाटनी, दर्पण रांवका, पंकज जैन, अभय जैन, राजेश जैन, वैभव जैन, अभिषेक जैन, विशेष रूप से उपस्थित थे। महिला श्रेष्ठीजनों का सम्मान मंजू वेद, ऋतु जैन, साक्षी झांझरी, खुशबू जैन, शशि टोंग्या, दर्शना जैन, रिया जैन, इना जैन, रूबी जैन, शिखा जैन, शुभी जैन, उर्वशी जैन, सुविधा जैन, दीप्ती जैन, पूजा जैन ने किया। मंच का संचालन महावीर जैन, साक्षी झाँझरी ने किया। आभार चिंतन जैन ने माना। राजवाड़ा पर 18 बाई 50 का भव्य स्टेज बनाकर बड़ा फ्लेक्स लगाया गया जिसमें महासभा के राष्ट्रीय पदाधिकारियों को प्रमुख रुप से दर्शाया गया।

राजकीय अतिथि आचार्य श्री प्रमुख सागर जी महाराज के अनमोल सूत्र

शत् शत् नमन वंदन

अक्षर जब अनुभव की श्रेणी में डूब जाते हैं तो सम्यग्ज्ञान बन जाते हैं

प्रभावना दिवाकर, श्रमण धर्म प्रभाकर, करूणा सागर, अहिंसा तीर्थ-प्रणेता, राष्ट्रसन्त, पंजाब श्रावक उद्धारक, सरलमना, ग्राम मन्दिर उद्धारक, इटावा गौरव, संस्कार प्रणेता, गुण-गौरव शिरोमणि, पुरूषार्थ के पुरूषोत्तम, श्रमण-गौरव, राजकीय अतिथि, राष्ट्रसन्त, बालयोगी के चरणों में शत-शत नमन

-: नमनकर्ता :-

श्रीमती प्रभा सेठी, गुवाहाटी
श्रीमती रिंकी सेठी, विजयनगर
श्रीमती सोनल पाटनी, कोलकाता
श्रीमती शिम्पल सेठी, आठगांव, गुवाहाटी
श्रीमती चन्द्रा बड़जात्या, गुवाहाटी
श्रीमती रूपा रारा, गुवाहाटी
सुभाष चूड़ीवाल, दिसपुर, गुवाहाटी
राजकुमार टोंग्या, रेहाबाड़ी, गुवाहाटी
विनोद कुमार गंगवाल, छत्रीबाड़ी, गुवाहाटी
पूर्वोत्तर प्रदेशीय दिगम्बर जैन महिला संगठन, गुवाहाटी
श्रीमती हेमा पाटनी, पान बाजार, गुवाहाटी
श्रीमती कुसुम बड़जात्या, गुवाहाटी

राजकीय अतिथि आचार्य श्री प्रमुख सागर जी महाराज दिसपुर में विराजमान हैं।

संकलन: R. K. Advertising शेखर पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता जैन गजट
मो - 09667168267 email: rkpatni777@gmail.com

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...
SANTOSH JAIN & ASSOCIATEL
SWATI VINIMAY & CONSULTAN PVT. LTD
ANAMICA TRADERS PVT. LTD.
L. N. FINANCE PVT. LTD.
OFFICE
CITY TRADE CENTER,
PNB Building, 4th Floor, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 99574-97927

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला | श्रीमती सरिता काला | संदीप-स्वाति पाटनी | श्रेयांस काला
RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com
SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

जयपुर शहर में भ. महावीर की 2623 वीं जन्म जयंती पर

निकाली भव्य शोभायात्रा, महावीर के दिव्य संदेशों से गूंजा जयपुर शहर

समारोह में आचार्य चैत्य सागर महाराज, आचार्य शशांक सागर जी महाराज एवं भारत गौरव गणिनी आर्यिका विज्ञा श्री माताजी नव दीक्षार्थी राकेश जैन को दीक्षा संस्कार देते हुए

महावीर जयंती समारोह में समारोह के अध्यक्ष अन्तर्राष्ट्रीय रत्न व्यवसायी विवेक काला की अगुवाई में राजस्थान जैन सभा के पदाधिकारियों सहित सभी प्रबुद्ध जनों ने रामलीला मैदान के मुख्य स्टेज पर जैन समाज का 129 वर्ष प्राचीन साप्ताहिक जैन गजट का विमोचन किया

भगवान महावीर की शोभायात्रा में रत्न जड़ित रथ के साथ राजस्थान जैन सभा के सभी पदाधिकारी गण साथ साथ

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर में 21अप्रैल 2024 को पूरी दुनिया को 'जीओ और जीने दो' का दिव्य संदेश देने वाले, विश्व वंदनीय भगवान महावीर स्वामी का 2623 वां जन्म कल्याणक महोत्सव रविवार को गुलाबी नगरी जयपुर में धूमधाम से मनाया गया, इस मौके पर कॉलोनियों व शहर के जैन मंदिरों में प्रातः श्रीजी के अभिषेक, पूजा-अर्चना के बाद कई कालोनियों में प्रभात फेरियां निकाली गई, वहीं शाम महाआरती करने के बाद भजनों व पालना झुलाने के विशेष आयोजन किये गये। कार्यक्रम में मुख्य आयोजन राजस्थान जैन सभा, जयपुर के तत्वावधान में आचार्य चैत्य सागर, आचार्य शशांक सागर महाराज, गणिनी आर्यिका विज्ञा श्री माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में न्यूगेट के रामलीला मैदान पर हुआ। कार्यक्रम में जैन गजट संवाददाता राजाबाबू गोधा ने शिरकत करते हुए बताया कि ध्वजारोहण, दीप प्रज्ज्वलन, स्मारिका विमोचन, धर्मसभा का भव्यता से आयोजन हुआ, युवा महासभा के विनोद जैन कोटखावदा से जानकारी पर ज्ञात हुआ कि शोभायात्रा में अलग-अलग स्थानों से आयी 18 झांकियों की अपनी अलग पहचान थी और वीरा प्रभु के ये बोल... आज महावीर जयंती है, जीओ और जीने दो जैसे विभिन्न धार्मिक नारे लगाते हुए विभिन्न भजनों की स्वर लहरियों पर झूमता-नाचता भक्तों का समूह, जयकारों के साथ अपनी अलग छटा बिखेरते हुए नाचते, गाते हाथों में पंचरंगे झन्डे लहराते हुए शोभायात्रा के साथ चल रहा था। यह शोभायात्रा मनिहारों का रास्ता स्थित महावीर पार्क से शुरू हुई तथा बैंडबाजों व ज्ञानवर्धक व संदेशात्मक झांकियों से सुशोभित यह शोभायात्रा चैड़ा रास्ता, त्रिपोलिया बाजार, बड़ी चौपड़, जौहरी बाजार, बापू बाजार, न्यू गेट होती हुई रामलीला मैदान जाकर समाप्त हुई।

कार्यक्रम में जैन गजट संवाददाता राजाबाबू गोधा आचार्य शशांक सागर जी महाराज से मंगलमय आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

शेष पृष्ठ पर 09..........

परम पूज्य वात्सल्य वारिधि, जिन धर्म प्रभावक, राष्ट्र गौरव आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज एवं समस्त मुनि संघ के चरणों में

शत् शत् नमन, शत् शत् वंदन
नमनकर्ता: राजेन्द्र कुमार जैन/भागचन्द्र जैन एवं समस्त छाबड़ा परिवार
'Manik Ratan Bldg', By lane Kamal Patrol Pump, H. B. Road, Machkhowa, Guwahati - 781009 Cell : 919435111035
Jain Group

निर्मल - पुष्पा बिन्दायका
बगरू निवासी कोलकाता प्रवासी
EVER GREEN be positive get positive
Evergreen Hosiery Industries Pvt. Ltd.
Corp. Regd. Office : 39, Tara Chand Dutta Street, 2nd Floor
Opp. : Moonlight Cinema, Kolkata - 700 073 (W.B.)
Mobile : 033 4001 0686, 91633 91228, 80131 20773
Email : evergreenhosieryindustries@yahoo.com
Website : www.evergreenhosieryindustries.com
Hello Bebe LITTLE POPS KIDS WEAR
Young India Fashions
Corp. Off. : 39, Tara Chand Dutta Street, 2nd Floor, Opp. : Moonlight Cinema
Kolkata - 700 073 (W.B.) Mob. : 98300 05085, 98302 75490
Factory : Regent Garments & Apparel Park, Block - 23, 5th Floor, Jessore Road
Near Fortune Township, Dist. - 24 Parganas (N) - 743294, Mob. : 98311 31838
MAHAVEER SAREE
Address : 446, Abhishek Market, Ring Road, Surat, 395002 (Gujrat)
Mobile : 75750 41434
EVERGREEN CREATION
Address : 369, Abhishek Textile Market, Ring Road, Surat, 395002 (Gujrat)
Mobile : 97279 82406, 98280 18707

कोटा में महावीर जन्म कल्याणक महामहोत्सव का भव्यता से हुआ आयोजन

कोटा, 21 अप्रैल। भगवान महावीर जन्म कल्याणक महामहोत्सव -2024 का आयोजन सकल दिगंबर जैन समाज समिति, कोटा के तत्वाधान एवं आचार्य श्री 108 विशुद्ध सागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनि श्री 108 आदित्य सागर जी महाराज ससंघ एवं स्वस्तिधाम प्रणेत्री गणिनी आर्यिका स्वस्तिभूषण माताजी ससंघ के परम सानिध्य में दशहरा मैदान में किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि माननीय लोकसभा अध्यक्ष श्रीमान ओम जी बिरला व अतिथि के रूप में राजस्थान सरकार में ऊर्जा मंत्री हीरालाल जी नगर, राजस्थान सरकार में शिक्षा मंत्री मदन जी दिलावर,

विधायक संदीप जी शर्मा, विधायक कल्पना देवी, महापौर, उपमहापौर सहित कई के कई गणमान्य श्रेणीजन उपस्थित रहे। सर्वप्रथम श्री जी की भव्य शोभायात्रा शहर के उपनगर तलवंडी क्षेत्र से प्रारंभ हुई। शोभायात्रा लगभग डेढ़ किलोमीटर लंबी रही, इसमें महिलाएं, पुरुष एवं पाठशाला के बच्चे पचरंगी ध्वज लेकर चल रहे थे। 24 बग्गियां, झांकियां एवं बठिंडा (पंजाब) से आया बैंड मुख्य आकर्षण का केंद्र रहे। मुनि एवं आर्यिका संघ का सानिध्य शोभायात्रा में प्राप्त हुआ। शोभायात्रा बड़े ही धूमधाम से दशहरा मैदान पहुंची, सर्वप्रथम दीप प्रज्वलन किया गया। विगत वर्ष की भांति इस वर्ष भी दीप प्रज्वलन करने का सौभाग्य श्रीमान मनोज जी, आशीष जी, प्रज्ञम जी जैन जैसवाल परिवार को प्राप्त हुआ। तत्पश्चात भगवान महावीर की संगीतमय सामूहिक पूजा की गई। महावीर जयंती कार्यक्रम में सामाजिक, धार्मिक एवं परोपकार के क्षेत्र में कार्य करने वाले तीन श्रेष्ठीयों व एक महिला का सम्मान किया गया इसमें भागचंद जी जैन, मनोज जी जैन जैसवाल, अनिल जी जैन ठोरा एवं अंजलि जैन का सम्मान किया गया। यह सभी सम्मान लोकसभा स्पीकर ओमजी बिरला एवं पधारे हुए अतिथियों के द्वारा किया गया। अतिथि उद्बोधन के पश्चात मुनिश्री 108 आदित्य सागर जी महाराज एवं आर्यिका 105 स्वस्ति भूषण माताजी के प्रवचनों का लाभ सभी को प्राप्त हुआ। अंत में श्री जी के अभिषेक हुए। कार्यक्रम में जैसवाल जैन समाज कोटा की ओर से पधारे हुए सजातीय बंधुओं के स्वागत हेतु मिल्क रोज की स्टाल लगाई गई।

बूंदी में सकल जैन समाज द्वारा निकाली गई भव्य शोभायात्रा

बूंदी। सकल जैन समाज बूंदी के तत्वाधान में भगवान महावीर जन्म कल्याणक पर भगवान महावीर की शोभायात्रा में पूरा सकल जैन समाज भक्ति भाव से उमड़ गया। इससे पूर्व मल्लाशाह के मंदिर पर भगवान महावीर का विधान किया गया, इस विधान को पंडित सुरेश सोनी, नगेंद्र जैन, पारस गंगवाल, शकुंतला बड़जात्या, सुनीता सोनी ने संपन्न करवाया।

भगवान महावीर जयंती संयोजक रामविलास जैन के संयोजन में भगवान महावीर की शोभायात्रा शाह के मंदिर से ठीक 1:15 बजे मल्लाशाह के प्रारंभ हुई जो सेठ जी का चौक सोतया पाड़ा नाहर का चोहटा तक भगवान को विमान में लाया गया उसके उपरांत भगवान को भव्य रथ में विराजमान किया गया।

भगवान को रथ पर ख्वाशी के रूप में पारस कुमार चाहत कुमार सोगानी और भगवान के सारथी के रूप में एडवोकेट रमेश चंद आदित्य भंडारी तथा दोनों ओर भगवान के दोनों तरफ रामविलास विकास मित्तल तथा बिरधी चंद राजेंद्र कुमार छाबड़ा परिवार चवर ढुलाते चल रहे थे, शोभायात्रा में बूंदी शहर की विभिन्न पाठशालाओं के बच्चे भगवान महावीर स्वामी के संदेशों को तख्तियां पर लेकर सबके आगे चल रहे थे।

शोभायात्रा में बड़े बाबा कुंडलपुर के साथ-साथ छोटे बाबा आचार्य विद्यासागर जी महाराज व आचार्य सुनील सागर जी महाराज के द्वारा की गई त्याग की झांकी तथा महिलाएं अपने सिर पर कलश लेकर चल रहीं तथा महिलाओं का नमोस्तु बैंड आकर्षण का केंद्र रहा।

शोभा यात्रा चौगान जैन नोहरा पर पहुंचते ही धर्म सभा में परिवर्तित हो गई । धर्म सभा में सकल जैन समाज के अध्यक्ष संजय जैन एडवोकेट ने भगवान महावीर के संदेशों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर भगवान के अभिषेक व शांति धारा की गई।

महावीर के जयकारों से गुंजायमान हुआ मानसरोवर

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर, 20 अप्रैल। सकल दिगंबर जैन समाज मानसरोवर जयपुर द्वारा भगवान महावीर स्वामी के 2623 वें जन्म कल्याणक महोत्सव के पावन अवसर पर पूर्व दिवस पर आयोजित विशाल वाहन प्रभातफेरी निकाली गई। कार्यक्रम के मुख्य संयोजक विनेश सोगानी ने बताया कि प्रभातफेरी का विधिवत शुभारंभ अग्रवाल फार्म मानसरोवर स्थित श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर से हुआ। आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर से पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर थड़ी मार्केट मीरा मार्ग स्थित आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर होते हुए हीरापथ स्थित पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर एवं कार्यक्रम का समापन श्री दिगंबर जैन मंदिर वरुण पथ मानसरोवर पर हुआ। सैकड़ों की तादाद में स्कूटर मोटरसाइकिल पर नौजवान संपूर्ण ऊर्जा के साथ भगवान महावीर स्वामी के जयकारे लगाते हुए चल रहे थे। मानसरोवर के सभी मंदिरों के महिला मंडल अपने पारंपरिक परिधान में ट्रैक्टरों पर भजन गाते भक्ति करते हुए जुलूस की शोभा बढ़ा रही थी। कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित एवं झंडारोहण के माध्यम से समाजसेवी श्री अशोक जी जैन श्रीमती नीतू जैन कोटलर वालों ने किया। वरुणपथ स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर में भगवान महावीर स्वामी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित करने का सौभाग्य श्री बाबूलाल ठेकेदार, श्रीमती विनीता जैन डीजे पनीर वालों को प्राप्त हुआ।

तरुण जैन को जनसंपर्क उत्कृष्टता सम्मान

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर, 21 अप्रैल। जनसंपर्क दिवस के अवसर पर पब्लिक रिलेशन सोसाइटी ऑफ इंडिया के जयपुर चैप्टर की ओर से आयोजित समारोह में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग में पदस्थापित सहायक निदेशक, जनसंपर्क तरुण कुमार जैन को जनसंपर्क उत्कृष्टता सम्मान से सम्मानित किया गया। जैन को यह सम्मान जनसंपर्क के क्षेत्र में अर्जित उनकी उपलब्धियों एवं उत्कृष्ट कार्य के लिए दिया गया। गरिमामय समारोह में यह सम्मान मुख्य अतिथि विधायक गोपाल शर्मा, प्रसिद्ध समाजसेवी

एवं सेबी के पूर्व चेयरमैन डी. आर. मेहता, शिक्षाविद नरेंद्र कुसुम, शास्त्री कोशलेंद्र दास एवं अन्य अतिथियों ने प्रदान किया। जैन विगत करीब 18 वर्षों से मीडिया एवं जनसंपर्क के क्षेत्र में सक्रिय हैं। वर्तमान में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग में जनसंपर्क का दायित्व संभाल रहे जैन लंबे समय तक मुख्यमंत्री कार्यालय में सेवाएं दे चुके हैं।

सीकर में जन्म कल्याणक पर निकली भव्य शोभायात्रा

सीकर। भगवान महावीर का 2623वां का जन्म कल्याणक महोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया। विवेक पाटोदी ने बताया कि इस पावन अवसर पर विभिन्न धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रम सकल जैन समाज द्वारा आयोजित किए गए। प्रातःकाल समस्त जैन मंदिरों में विशेष अभिषेक शांतिधारा हुई, इसके पश्चात विधान पूजन हुए। स्टेशन रोड स्थित अहिंसा सर्किल महावीर स्तूप पर जैन वीर संगम द्वारा भक्तिमय कार्यक्रम आयोजित हुए। श्रीमती परमेश्वरी देवी धर्मपत्नी स्व. महेन्द्र कुमार जी ठोलिया (रेवासा वाले) परिवार वालों की तरफ से स्तूप पर झंडारोहण किया गया। इसके पश्चात सकल दिगंबर जैन समाज के द्वारा शहर में भव्य शोभायात्रा निकाली गईं। श्री दिगंबर जैन विद्यालय सोसायटी द्वारा आयोजित भव्य शोभायात्रा में शाही लवाजमे, ऊंट घोड़े, गाजे बाजे के साथ जन्म कल्याणक महोत्सव को लेकर निकाली गई शोभायात्रा में भव्य रथ में भगवान महावीर की फोटो को सजाया गया। विद्यालय सोसायटी अध्यक्ष डा. प्रदीप जैन व सचिव विनोद जयपुरिया ने बताया कि शोभायात्रा जैन स्कूल से रवाना होकर शहर का भ्रमण कर अहिंसा सर्किल, स्टेशन रोड, जाट बाजार, बावड़ी गेट, सुभाष चैक, फतेहपुरी गेट बजाज रोड़ होते हुए पुनः विद्यालय परिसर पहुंचीं। इस दौरान शोभा यात्रा में काफी संख्या में जैन समाज के हर वर्ग के लोग सम्मिलित हुए। विद्यालय द्वारा तैयार झांकियों के साथ जैन सोश्यल ग्रुप, संस्कार बहु मंडल, जैन मित्र मंडल द्वारा भी झांकियां सजाई गई। वीर

ध्वनि द्वारा शोभायात्रा की विशेष कवरेज की गई। शोभायात्रा के दौरान जगह जगह ड्रोन से पुष्प वर्षा भी की गई। शोभायात्रा के दौरान स्थानीय पुलिस, प्रशासन के सहयोग हेतु आयोजकों द्वारा आभार व्यक्त किया गया। प्रिंसिपल मीनाक्षी भार्गव ने बताया कि शोभायात्रा के समापन पश्चात विद्यालय परिसर में स्कूल के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। भगवान महावीर के जन्म की खुशियों को दर्शाती नृत्य प्रस्तुतियां भी समाज के बच्चों द्वारा की गई। कार्यक्रम के दौरान आचार्य विद्यासागर जी के जीवन से जुड़ी लघु नाटिका भी प्रस्तुत की गई। निकटवर्ती ग्राम दूजोद स्थित महावीर स्वामी जैन मंदिर में सायंकाल 108 दीपकों से महाआरती की गई। स्थानीय स्टेशन रोड़ स्थित अहिंसा सर्किल में जैन सोश्यल ग्रुप द्वारा सजावट की गई।

पाठकों के संगम के लिए कार्यक्रम आयोजित

जयपुर। पुस्तक पाठक संगम की ओर से भगवान महावीर जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में जयपुर के गायत्री नगर ए, महारानी फार्म, दुर्गापुरा स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर में शाम 3 बजे पाठकों के संगम के लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम डॉ. धर्मचन्द्र जैन द्वारा लिखित पुस्तक ''तीर्थंकर महावीर'' पर चर्चा केंद्रित रही। अंत में डा. सतेन्द्र जैन ने भगवान महावीर के द्वारा 4 दानों - अभयदान, आहारदान, औषधिदान और ज्ञानदान की महिमा बताई। पुस्तक पाठक संगम (बुक रिडर्स क्लब) की संचालिका डॉ. दर्शना ने कहा कि रिडर्स क्लब का उद्देश्य समाज और विशेषकर युवाओं में स्वाध्याय को बढ़ावा देना है जिससे अपने अपने क्षेत्र में सामाजिक मूल्यों को जीवित रखते हुए कार्य किया जा सके। कार्यक्रम का संचालन कुणाल ने किया। डॉ. दर्शना ने मंदिर कमेटी और पाठकों का आभार व्यक्त किया।

आचार्य भद्रबाहू सागर जी महाराज की अनमोल वाणी

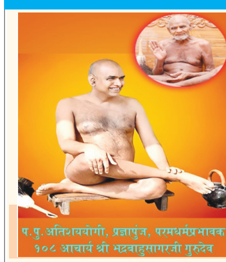

परम पूज्य 108 प्रज्ञापुंज धर्म प्रभावक अतिशय योगी आचार्य श्री भद्रबाहूसागरजी महाराज

कोष के पीछे कितनों को कोसते हो, सगे-सगों में सगापन नहीं झलकता है। एक कोख से आने वालों में इस कोष ने कितना भेद करा डाला

-: नमनकर्ता :-

दीपचन्द गंगवाल, बाराबंकी
श्रीमती नीता जैन, बाराबंकी
श्रीमती अनिता जैन, बाराबंकी
श्रीमती आशु जैन, बाराबंकी
मुदित जैन, प्रयागराज
दिलीप जैन, प्रयागराज ...

महेश जैन, बोदेगांव (महा.)
राकेश जैन, परभनी (महा.)
तुषार मनोज कुमार चौबाकर, परभनी महा.
प्रकाशचन्द्र साउजी, अम्बड़ (महा.)
दिलीप दोषी, मुम्बई (महा.)
सुनिल हीराचन्द दोषी, अकलूज (महा.)

परमपूज्य 108 प्रज्ञापुंज धर्म प्रभावक अतिशययोगी आचार्य श्री भद्रबाहूसागरजी महाराज जी के चरणों में शत शत वन्दन

संकलन: R. K. Advertising शेखर पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता जैन गजट
मो - 09667168267 email: rkpatni777@gmail.com

मुनि इन्द्रदत्तसागर बने ब्रह्मचारी दीपचंद जी तपोवन जैन तीर्थ पर हुई दिगम्बर जैन मुनि दीक्षा

सागर। वैज्ञानिक संत आचार्यश्री निर्भयसागर जी महाराज के कर कमलों से तपोवन जैन तीर्थ बहेरीया तिगड्डा सिद्धगुआ सागर में 2019, 2021 के बाद पद्मप्रभु भगवान के तपोवन तीर्थ क्षेत्र पर मुनि दीक्षा 19 अप्रैल 2024 को प्रातःकालीन शुभ बेला में सम्पन्न हुई, इस अवसर पर सागर नगर के गौरव ब्रह्मचारी दीपचंद जी शास्त्री, सुभाष नगर वालों ने मुनि दीक्षा ग्रहण की, जिनका नामकरण मुनिश्री इन्द्रदत्तसागर किया गया। दीक्षा होते ही जय-जयकार होने लगी। दीक्षा के समय सौधर्म इन्द्र बनकर केशलोंच झेलने का सौभाग्य जिनेन्द्र कुमार जैन मेडिकल स्टोर गैरतगंज वालों को प्राप्त हुआ। दीक्षार्थी के चौक पूरने का अवसर ब्रह्मचारिणी सुजाता दीदी के परिजन छोटे लाल गैरतगंज, राजीव कुमार दमोह, श्रद्धा जैन ललितपुर एवं दीक्षार्थी के परिजनों को प्राप्त हुआ। ध्वजारोहण करने का सौभाग्य महेंद्र कुमार नीलेश कुमार भूसा वाले, वण्डा वालों को प्राप्त हुआ। पाद प्रक्षालन करने का सौभाग्य चक्रेश कुमार भोपाल, महेन्द्र कुमार पी सी वाले, श्रेयांस कुमार ललितपुर को प्राप्त हुआ। शास्त्र भेंट करने का सौभाग्य अमरचंद जैन राहतगढ़, राजेश कुमार ऐडीना कालेज, विमल ऐडीना सागर को प्राप्त हुआ। पिच्छिका प्रदान करने का सौभाग्य दीक्षार्थी के ग्रहस्थ जीवन के पुत्र राजीव जैन, पूजा जैन सुभाष नगर एवं कमण्डल प्रदान करने का सौभाग्य दीप्ति नयन कुमार नायक तिलकगंज सागर को प्राप्त हुआ। माला प्रदान करने का सौभाग्य सुबोध कुमार शैलेन्द्र कुमार सागर को प्राप्त हुआ। दीक्षार्थी के धर्म के माता पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती दीप्ति नयन नायक को प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संचालन ब्रह्मचारी धीरज भैया राहतगढ़ वालों ने किया। अन्य ब्रह्मचारी भाइयों में विनोद भैया, अजय भैया झापन, राकेश भैया जी भी उपस्थित थे। जैन समाज के अलावा नरयावली विधायक प्रदीप लारिया, सागर नगर विधायक शैलेंद्र जैन, पूर्व विधायक सुनील जैन, सांसद प्रतिनिधि लता वानखेडे, पार्षद विवेक सक्सेना, गुलझारीलाल, चक्रेश पटना, दिनेश विलेहरा, मुकेश ढाना, अनिल नैनधरा मनोज लालो, एडवोकेट रश्मि रितु, डा. अमरचंद, अशोक पटवारी, प्रेमचंद पटवारी, पवन सिंघई, पवन मेडिकल, शरद सिंघई, अशोक चितोरा, सुकुमाल जैन नैनधरा, कमलेश चौधरी, सुनील शाहगढ, पूर्व पार्षद संजय जैन, ऋषभ सिनेमा, संपत जैन, सुरेश बीज निगम, उमेश ज्वैलर्स, विमल विलानी, सभी दिव्यघोष, समस्त महिला मण्डल, बालिका मण्डल इत्यादि समाज श्रेष्ठी उपस्थित थे।

महावीर जन्म कल्याणक पर रथ पर सवार भगवान ने नगर भ्रमण किया

मुरेना (मनोज जैन नायक)। भगवान महावीर स्वामी जन्म कल्याणक महोत्सव विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। इस दौरान भगवान महावीर स्वामी ने रथ पर सवार होकर नगर भ्रमण किया।

जन्म कल्याणक महोत्सव समिति के मुख्य संयोजक रमाशंकर जैन लाला ने जानकारी देते हुए बताया कि जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी जन्म कल्याणक पर तीन दिवसीय महोत्सव का आयोजन किया गया। इस पुनीत एवं पावन पर्व पर भगवान महावीर स्वामी को रथ पर विराजमान कर भव्य शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा में बैंडबाजे, नगाड़ों के साथ घोड़ों पर सवार ध्वजवाहक चल रहे थे। साथ ही जैन सिद्धांतों पर आधारित झाकियां जैन धर्म का यशोगान करती हुई चलायमान थीं। चल समारोह में अधिकांश पुरुष सफेद वस्त्र धारण किए हुए थे। सभी के गले में पीत पट्टिका एवं सिर पर सफेद जय जिनेंद्र की टोपी शोभायमान हो रही थी। महिलाएं केसरिया साड़ी में महावीर स्वामी का गुणगान करती हुई भक्ति भाव के साथ जय जयकार करती हुई चल रहीं थीं। डीजे पर भगवान की स्तुति एवं भजन चल रहे थे, जिन पर युवावर्ग अत्यंत शालीनता के साथ भक्ति नृत्य कर रहे थे। रथ पर सवार महावीर भगवान के रथ को युवा वर्ग अपने हाथों से खींच रहे थे। बड़ा जैन मंदिर मुरेना से रथयात्रा प्रारंभ होकर गोपीनाथ की पुलिया, जीवाजी गंज, राम जानकी मंदिर, एम एस रोड, सदर बाजार, स्टेशन रोड, शंकर बाजार, लोहिया बाजार भ्रमण करता हुआ बड़े जैन मंदिर पहुंची। स्थान स्थान पर भगवान महावीर स्वामी की आरती उतारी गई। विभिन्न स्थानों पर शोभायात्रा का भव्य स्वागत किया गया। शोभायात्रा के बड़ा मंदिर पहुंचने पर भगवान महावीर स्वामी को पांडुक शिला पर विराजमान कर इंद्रों द्वारा भगवान का जलाभिषेक एवं शांतिधारा की गई। श्री जिनेंद्रप्रभु की विशेष पूजा अर्चना की गई। कार्यक्रम के पश्चात सकल जैन समाज का वात्सल्य भोज का आयोजन किया गया।

कुंडलपुर में भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव पर हुये विविध धार्मिक आयोजन

मुनि प्रमाणसागर जी एवं मुनि पवित्रसागर जी आदि मुनिराजों का दीक्षा दिवस मनाया गया

कुंडलपुर, दमोह। सुप्रसिद्ध सिद्धक्षेत्र कुंडलपुर में जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के जन्म कल्याणक महोत्सव पर विविध धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। युग श्रेष्ठ संत शिरोमणि आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य परम पूज्य आचार्य श्री समयसागर जी महाराज के चतुर्विध संघ के मंगल सानिध्य में प्रातः 6:30 बजे प्रभातफेरी, श्री जी का पालना, भगवान महावीर स्वामी के चित्र के साथ गाजे-बाजे से मानस्तंभ परिसर से प्रारंभ होकर बड़े बाबा मंदिर तक प्रभातफेरी निकाली गई।

प्रभातफेरी में बड़ी संख्या में लोगों की उपस्थिति रही, मुनि संघ एवं आर्यिका संघ की भी उपस्थिति रही। बड़े बाबा मंदिर में भक्तांमर महामंडल विधान, पूज्य बड़े बाबा का अभिषेक, शांतिधारा, पूजन, महावीर पूजन एवं पूज्य मुनि श्री के मंगल प्रवचन हुए। गुणायतन प्रणेता मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज एवं मुनि श्री पवित्र सागर जी महाराज का दीक्षा दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज, मुनि श्री पवित्र सागर जी महाराज, निर्यापक मुनि श्री सुधा सागर जी महाराज, आचार्य श्री समयसागर जी महाराज के मंगल प्रवचन हुए। दोपहर 3:30 बजे श्री जी की शोभायात्रा कुंडलपुर ग्राम का भ्रमण करती हुई निकाली गई। ज्ञान साधना केंद्र के सामने अभिषेक पूजन का भव्य कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस अवसर पर मिष्ठान वितरण किया गया। सायंकाल बड़े बाबा मंदिर में भक्ताम्मर दीप अर्चना, पूज्य बड़े बाबा की संगीतमय महाआरती हुई। मानस्तंभ परिसर में रात्रि में पालना झुलाया गया एवं भजन संध्या का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

दूसरों में झांकने की जगह अपने आप में देखो तो होगा कल्याण

- मुनि पूज्य सागर जी महाराज

इंदौर। अंतर्मुखी मुनि श्री पूज्य सागर जी महाराज का मंगल प्रवेश परदेशीपुरा की क्लर्क कॉलोनी में हुआ। इस अवसर पर धर्म सभा को संबोधित करते हुए मुनि श्री ने कहा कि दूसरों में झांकने की जगह अपने आप में देखो तो आपका कल्याण होगा। कार्यक्रम में इंदौर के लगभग 123 दिगंबर जैन मंदिरों में से उन 18 मंदिरों की जानकारी वाली देने वाली पुस्तक का विमोचन किया गया जिनमें मूलनायक के रूप में भगवान महावीर की प्रतिमा विराजित है। पुस्तक का संपादन श्रीफल जैन न्यूज की संपादक रेखा संजय जैन ने किया है। विमोचन क्लर्क कॉलोनी के मंदिर के महामंत्री आनंद गोधा, प्रवीण जैन, नीरज जैन, संजय काका, सिद्धार्थ गंगवाल, संजय जैन व रेखा संजय जैन, कमलेश जैन ने किया। रेखा संजय जैन का सम्मान सुभद्रा गोधा, पुष्पलता जैन, मधु जैन, अनीता पहाड़िया और नीलू जैन ने किया। वहीं मुनि श्री के साथ 8 महीने से प्रतिदिन विहार में अपना सहयोग दे रहे कमलेश जैन का स्वागत भी समाज द्वारा किया गया। महामंत्री आनंद गोधा ने आभार प्रदर्शित किया।

अभिषेक व्यवस्था समिति का सराहनीय योगदान

कुंडलपुर (दमोह)। सुप्रसिद्ध सिद्धक्षेत्र कुंडलपुर में पहाड़ी पर स्थित पूज्य बड़े बाबा के भव्य विशाल जिनालय में प्रतिदिन प्रातःकाल से भक्ताम्मर महामंडल विधान, पूज्य बड़े बाबा का अभिषेक, शांति धारा, पूजन, विधान का कार्यक्रम भव्यता के साथ संपन्न होता है।

आचार्य पद पदारोहण अनुष्ठान कार्यक्रम के तहत बड़ी संख्या में भक्त श्रद्धालुओं ने पूज्य बड़े बाबा का अभिषेक कर पुण्य अर्जन किया। अभिषेक के लिए लंबी कतारें देखी गईं और हजारों भक्तों ने प्रतिदिन बड़े बाबा का अभिषेक किया। अभिषेक के लिए उमड़ी भीड़ को नियंत्रित करने एवं सुव्यवस्थित अभिषेक कराने में अभिषेक व्यवस्था समिति ने बहुत ही सेवाभाव से व्यवस्था बनाने में योगदान प्रदान किया। अभिषेक व्यवस्था समिति में धार्मिक आयोजन मंत्री अजय निरमा, पंडित अभिषेक जी, पंडित आशीष जी, सवन सिल्वर, सुलभ बजाज, जय कुमार जैन गोलू, कुलदीप जैन, संदीप जैन, सोनू जैन, जयकुमार जैन पुरावाले, हर्ष जैन नानू, शशांक सिंघई, विद्युत जैन, सुजल जैन, अक्षत सिंघई, आरिन जैन, संयम बमोरया, हर्ष जैन, सुयश जैन, आर्जव जैन, समय जैन सहित अनेक स्वयंसेवी जनों का सहयोग मिला।

पालना झुलाने का कार्यक्रम किया गया

सागर नगर के वर्णी कालोनी स्थित जैन धर्मशाला में ''जियो और जीने दो'' का संदेश देने वाले जैन धर्म और वर्तमान काल के 24 वें तीर्थंकर, वर्तमान शासन नायक देवाधिदेव भगवान महावीर स्वामी के 2623 वें जन्म कल्याणक महोत्सव की पूर्व संध्या पर महिलाओं द्वारा भगवान का पालना झुलाओ कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत दीप जलाकर एवं मंगलाचरण से हुई, तत्पश्चात महिलाओं ने बहुत ही मनमोहक नृत्य और भजनों की प्रस्तुति दी, यह भाव पूर्वक प्रभु भक्ति का एक रूप है। कार्यक्रम आयोजक श्रीमती रचना, अलका दिगम्बर, विनीता, साधना, वंदना, सुनीता, सरिता पटना, ऋतु, शोभा, डी. के. डॉ. रागिनी, श्रद्धा, नीतू, रानी गोयल रहीं।

कुंडलपुर से तीन उपसंघों का मंगल विहार

दिनांक 26 अप्रैल 2024 को आचार्य श्री विद्या-समयसिंधु के 3 उपसंघ का विहार हो गया।

1. निर्यापक श्रमण मुनि श्री सुधासागर जी महाराज

- क्षुल्लक श्री गंभीरसागर जी महाराज
- क्षुल्लक श्री वरिष्ठसागर जी महाराज
- क्षुल्लक श्री विदेहसागर जी महाराज

2. मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज

- मुनि श्री निर्वेगसागर जी महाराज
- मुनि श्री संधानसागर जी महाराज
- क्षुल्लक श्री 105 आदरसागर जी महाराज
- क्षुल्लक श्री 105 समादरसागर जी महाराज
- क्षुल्लक श्री 105 चिद्रूपसागर जी महाराज
- क्षुल्लक श्री 105 स्वरूपसागर जी महाराज
- क्षुल्लक श्री 105 सुभगसागर जी महाराज

एवं 3. मुनि श्री अजितसागर जी महाराज

- मुनि श्री नीरागसागर जी महाराज
- ऐलक श्री विवेकानंदसागर जी महाराज ससंघ का मंगल विहार सिद्धक्षेत्र कुंडलपुर से हुआ। 26 अप्रैल को आहारचर्या पटेरा में हुई।

सम्पादकीय

महावीर जयन्ती की सार्थकता

वर्तमान में हमारे देश में चारों ओर अविश्वास और संदेह का वातावरण व्याप्त है, समूचा देश हिंसा और आतंकवाद की भीषण ज्वाला से दग्ध होकर ''त्राहिमां, त्राहिमां'' पुकार रहा है, हाथ को हाथ खाये जा रहा है, हमारे वचन और कर्म में अनैक्य है, शब्दों से हम त्याग, तपस्या, सहचर्य, मेल-मिलाप, भाईचारे का गुणगान करते नहीं थकते किन्तु हमारे कार्यों में अधर्म, ढोंग तथा धन का बोलबाला है। ऐसी अवस्था में प्रत्येक चिन्तनशील, मननशील व्यक्ति इन परिस्थितियों से छुटकारा पाने का उपाय ढूंढने को बाध्य है।

आज से लगभग 2600 वर्ष पूर्व भी भारत की अवस्था ऐसी ही थी या इससे भी अधिक सोचनीय थी। संस्कारहीनता रग- रग में समा गई थी, लोग सदाचार-शून्य हो गये थे, उनमें सहनशीलता समाप्तप्राय थी, नारी का कोई सम्मान नहीं था, वह सरे बाजार नीलाम की जाती थी। दास-प्रथा का बोलबाला था, यज्ञों में पशु ही नहीं मानव तक आहूत किये जाते थे, धर्म-शास्त्र ऐसी भाषा में रचे जाते थे, जो सर्व

साधारण की समझ से परे थे। देश, वर्ग, जाति, सम्प्रदाय, ऊंच-नीच आदि वर्गों में बंटकर टुकड़े-टुकड़े हो रहा था। ऐसे कठिन समय में भगवान महावीर को हम सत्य-धर्म का निरूपण करते हुये देखकर निश्चय ही विस्मय-विभोर हो उठते हैं। अर्थहीन कर्मकाण्ड के स्थान पर अध्यात्मभाव की नई दृष्टि प्रदान कर वे धर्म को अमंगल भूमि से मंगल भूमि में स्थापित कर देते हैं। शुभ और अशुभ की सत्य लक्षी यथार्थ व्याख्या कर वे मनुष्य मात्र की आंखें खोल देते हैं। इसमें तनिक भी संदेह की गुंजाइश नहीं। सभी प्राणियों में परमात्म तत्व की भावना अपनाकर मनुष्य वास्तव में मनुष्य कहलाने का अधिकारी हो गया। मानवता की दिव्य-प्रभा से मानव हृदय आलोकित हो उठा।

सामाजिक क्षेत्र में भगवान महावीर की जो देन है वह सर्वथा क्रान्तिकारी देन कही जायेगी। समत्व की चर्चा मनुष्य समाज में प्रथम बार उनके द्वारा हुई, व्यवहार में समता का जीवन मनुष्यों को प्रथम बार उनके द्वारा प्राप्त हुआ। उन्होंने शूद्र और नारी समाज के लिये उत्थान का मार्ग प्रशस्त कर दिया। नारी को केवल भोग्य या दासी बनाकर नारकीय जीवन बिताने की आज्ञा देने वालों को अपनी क्रूरता पर पश्चाताप होने लगा। इतिहास के पृष्ठों में चन्दनबाला की कष्ट-कथा तत्कालीन मनुष्य समाज की दानवी प्रवृत्ति, सामाजिक विकृति, दोनों को ही उजागर करने वाली कथा है। महावीर ने उसे यंत्रणापूर्ण जीवन से उबार कर विराट साध्वी संघ के प्रमुख पद की पीठिका पर समासीन करने की भूमिका निबाही। उनके धर्म-संघ में वह श्रेष्ठ मानव आचारों की प्रवक्ता बनी। समाज की विषमता दूर करने में भगवान महावीर को हम अन्य सभी महापुरुषों से आगे पाते है। ज्ञात इतिहास में उनके वैशिष्ट्य की तुलना सहज ही किसी दूसरे से नहीं की जा सकती।

आज हमारे जीवन में नैतिक मूल्यों का निरंतर ह्रास और विघटन होता जा रहा है। इसके फलस्वरूप हमारे जन-जीवन में जो रिक्तता आई है उसकी परिपूर्ति की दिशा में हमारी सांस्कृतिक धरोहर से ही राष्ट्र को आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त हो सकती है। भौतिक ऐश्वर्य की चकाचौंध में आज का मानव समत्व को नहीं देख पा रहा है। जातीय भेद-भाव, ऊँच-नीच तथा साम्प्रदायिकता की विषाक्त भावना के कारण मानव मानव के रक्त का प्यासा हो रहा है। समाज में

धर्म, भाषा तथा प्रान्त के नाम पर चारों ओर हिंसा और आतंकवाद का लोमहर्षक ताण्डव नृत्य हो रहा है। जो धर्म परस्पर जोड़ने का प्रमुख सूत्र था आज वही हमें तोड़ने का मूल कारण बन रहा है। हम ''सर्वे भवन्ति सुखिनः'' के दिव्य आदर्शवाली भारतीय संस्कृति के उपदेष्टा, प्राणी मात्र के उदय की उद्घोषणा करने वाले, सर्वोदय के मंत्र दाता भगवान महावीर के जीवन दर्शन को भूल गये हैं।

ऐसे अशान्त, क्लान्त और दिग्भ्रमित समाज को भगवान महावीर का जीवन-दर्शन रूपी आलोक ही सही दिशा-निर्देश दे सकता है। भगवान महावीर के वचन व्यावहारिक जीवन की कसौटी पर कसे हुए शाश्वत सत्य हैं, जिनमें वैज्ञानिकता एवं आध्यात्मिकता का अपूर्व सम्मिश्रण है। किसी भी जाति, धर्म अथवा सम्प्रदाय का व्यक्ति उनके बताये हुये मार्ग पर चलकर आत्म-शुद्धि तथा आत्मोन्नति के शिखर पर आरूढ़ हो सकता है। उनका जीवन दर्शन किसी युग विशेष अथवा वर्ग विशेष के लिये नहीं है, वरन प्राणी मात्र के लिये है, युगों-युगों के लिये है। वह सार्वकालिक, सार्वदेशिक और सार्वभौमिक है।

भगवान महावीर के विषय में कुछ भी लिखना बड़ा मुश्किल है। वह अत्यन्त अद्भुत व्यक्तित्व था। उसे व्यक्तित्व कहना ही अल्पता है। वे व्यक्तित्व से ऊपर उठ गये थे। पकड़ में आने जैसा उनका व्यक्तित्व था ही नहीं। उन्हें कहाँ से पकड़ा जाय, कहाँ से ग्रहण किया जाय, यह तय करना उन लोगों के लिये भी कठिन था जो उनके समय में भी जीवित थे, उनके आसपास उपस्थित थे और जो समग्र रूप से उनकी वाणी को झेलने में तत्पर थे। बरसों तक महावीर का पदानुसरण करने के उपरान्त भी लोग भटक गये। बुद्ध जैसे ज्ञानी और श्रेणिक जैसे नृपति भी उस गहरे और अत्यन्त गंभीर व्यक्तित्व की थाह न पा सके जिसे महावीर जी रहे थे और फैला रहे थे।

महावीर का आना हमारे लिये हजारों हजार वर्षों के लिये एक घटना हो गई है। हम इस घटना पर गर्व करते हैं और कहते है कि वह न 'भूतो न भविष्यति' है, लेकिन महावीर के लिये यह घटना अगण्य थी, न कुछ थी। वे घटनाओं की श्रृंखला से उत्तीर्ण हो चुके थे। संसार में लिप्त आँखें घटनाओं की कीमत पर व्यक्तित्व की महत्ता का मूल्यांकन करती हैं, तुला पर व्यक्तित्व को तौलती हैं। हम घटनाओं द्वारा व्यक्तित्व को आँकने के अभ्यस्त हो गये हैं। महावीर ने अपने को घटित होने से इन्कार कर दिया, शरीर के साथ, शरीर सम्बन्धों के साथ, संसार के बीच जो कुछ होता है, वह सब भरमाने वाला है। शरीर अगर राख होने वाला है तो उससे संस्पर्शित समस्त घटनाएं भी राख होने वाली हैं। इसका कोई शाश्वत मूल्य नहीं है। अगर महावीर के जीवन में घटनाएँ नहीं मिलती हैं तो हम परेशान होते हैं, चिंतित होते हैं, बेचैन होते हैं और अपने को दीन-दरिद्र समझते हैं।

सचमुच अव्यक्त चेतना में और ऊर्जा में जीने वाले, आनन्दलोक में, प्रकाश में विचरण करने वाले को समझना और अपने जीवन में उतारना अत्यन्त कठिन है। महावीर यों सबको सुलभ थे, सबके समक्ष समुपस्थित और आज भी वे प्रतिक्षण प्रकाशमान है, लेकिन हमारी बाह्य आँखें, बाहर भटकने वाली इन्द्रियाँ उनको देख नहीं पा रही हैं, क्योंकि हम बाह्यता पर लुब्ध हैं, विमोहित है। हमारी निष्ठा की परिधि वस्तुगत, पदार्थगत और घटनागत है। व्यापक-विराट अव्यक्त दर्शन का अभ्यास हमारी इन्द्रियों को रहा ही नहीं।

हम घटनाओं के द्वारा परमता की, आत्मत्व को उपलब्ध करने के आकांक्षी हैं, जबकि महावीर आत्मतत्व को उपलब्ध होकर घटनाओं को तटस्थ भाव से देखते है और उनमें प्रविष्ट हो जाते हैं। हम कर्म और क्रिया द्वारा अहिंसक बनने की प्रक्रिया अपनाते हैं और हिसाब-लगाते हैं कि इतना कुछ घटित हो जाने पर मुक्ति उपलब्ध होगी, परन्तु महावीर विलक्षण हैं। वे अहिंसक पहले से हैं और उसी के आलोक में संसृप्ति की घटनाओं के साक्षी बनते हैं। अहिंसा उनकी आत्मा थी, हमारे लिए वह साध्य है। हम घटना के द्वारा, क्रिया के द्वारा, व्रत के द्वारा, चर्या के द्वारा अहिंसा की साधना में संलग्न हैं। यह प्रक्रिया अपने में द्वैतपरक है, हिंसक है, यह बात महावीर ही जान सकते थे, क्योंकि उनकी चेतनता अद्वैत को, एकरूपता की समग्रता को उपलब्ध हो गई थी।

हम निषेध की, अस्वीकार की, छोड़ने की, पलायन की भाषा में और चर्या में सोचते हैं। हम इतने बाह्य और गणितप्रिय हैं कि आंकड़ों से और वस्तुगत परिधि से परे देख नहीं पाते हैं। महावीर निषेध की, स्वीकार की, ग्रहण की प्रक्रिया में विचरते थे। उनके लिए ग्रहण में भी त्याग था और त्याग में भी ग्रहण। उनके लिये त्याग और ग्रहण में कोई अन्तर नहीं रह गया था।

महावीर ने जो कुछ छोड़ा, वह छोड़ा नहीं था, वह आपोआप छूट गया था, क्योंकि उन्हें उत्कृष्ट या बिराट उपलब्ध हो गया था। निकृष्ट को छूटना ही था। नसैनी का जब ऊपरी डण्डा हाथ आ जाता है तो नीचे का डण्डा अपने आप छूट जाता है। उसे छोड़ने का प्रयास नहीं करना पड़ता है। जब बढ़िया वस्तु हाथ लगती है तो घटिया अपने आप छूट जाती है। महावीर ने क्या-क्या छोड़ा था, यह शायद वे स्वयं न बता सके। पर हम बता सकते हैं कि हमने क्या-क्या छोड़ा, क्योंकि हम छोड़कर प्राप्त करने की आशा या अभीप्सा में तन को गलाते हैं। महावीर इतने आनन्दोपलब्ध थे, ज्ञान चेतना से भरे थे कि बाहर का अपने आप छूट गया।

सत्य और मिथ्या को जांचने की कसौटी बाह्यता कभी नहीं है। बाहर से हिंसक दीखने वाली घटना में भी परम अहिंसा हो सकती है और अहिंसक दीखने वाली घटना भी घोर हिंसामय हो सकती है। इसलिए महावीर घटना से अधिक उसकी आंतरिक भूमिका को, उसके रहस्य को महत्व देते थे। इसी अर्थ में वे ज्ञाता-दृष्टा थे और इसी के लिये अनेकान्त की कसौटी उन्होंने प्रस्तुत की। किताबी कानून या संहिता ऐसे लोगों के लिये बेमानी होती है। महावीर जैसे दृष्टा- ज्ञाता ही जान सकते हैं कि बाह्यतः दीखने वाली अहिंसा के भीतर कितना आग्रह, कितना अहंकार और दर्प है। महावीर सहज नग्न थे, सहज विहारी थे, वीतराग थे, लेकिन उनकी छवि को भी हमारी आखें बिना रागद्वेष के नहीं निहार सकतीं। उनकी सर्वांगसुन्दर सहज मूर्ति में भी हम 'अश्लीलता' को ढांकने का बाल- प्रयास करते हैं। अपनी भोगाकांक्षा कायासक्ति की तृप्ति भी हम प्रतिकार के द्वारा करना चाहते हैं।

जो ग्रन्थ और ग्रन्थियों से सर्वथा मुक्त थे उनको हम ग्रन्थों में खोजना चाहते हैं और ग्रन्थों में आबद्ध करना चाहते हैं, क्योंकि हम स्वयं प्रमाण बनने के बदले ग्रन्थ प्रामाण्य में विश्वास करते हैं। जिन्हें स्वयं का विश्वास नहीं होता, जिन्हें अपने पथ का ज्ञान नहीं होता, वे ही ग्रन्थ और पन्थ में उलझते हैं। ग्रन्थों से हम अपनी चर्या तय करते हैं। ग्रन्थ के मरे हुए सत्य को हम अपना जीवन धर्म बना लेते हैं। महावीर के पीछे ग्रन्थों का ढेर लगाकर हम महावीर के व्यक्तित्व को विस्मृत कर गये हैं। उनका जीवन्त, तेजस्वी व्यक्तित्व ग्रन्थों में छिप गया है। अब हम उनकी देह के साथ अपने को एकरूप करने के प्रयास में संलग्न हैं। परिणामतः राजनीति और अर्थ नीति हम पर हावी हैं। यह महावीर ही जानते थे कि ग्रन्थों का सत्य सजीव नहीं होता, क्योंकि सत्य निरन्तर नया होता है और वह सर्वथा वर्तमान में ही रहता है- अतीत तो स्मृति मात्र होता है। यदि हमें मानव-मानव के बीच की खाई को पाटकर समता, ममता और एकता की त्रिवेणी को प्रवाहित करना है, यदि विश्व-नागरिकता, विश्व बन्धुत्व और वसुधैव कुटुम्बकम की उदात्त भावना को मानव मात्र के हृदय में उद्वेलित करना है तो हमें भगवान महावीर के सदुपदेशों तथा आदर्शों को जन-जीवन में प्रतिष्ठित करना ही होगा। तभी विश्व-मैत्री और विश्व-शांति सच्चे अर्थों में स्थापित हो सकती है।

- कपूरचन्द पाटनी
प्रधान सम्पादक

मंदिर और मर्यादा

डॉ. नरेन्द्र जैन भारती, सनावद

भारतवर्ष की प्राचीन संस्कृति में मंदिरों को धार्मिक स्थलों के रूप में मान्यता प्राप्त है। ये मंदिर हमारी श्रद्धा, आस्था और भक्ति भावना के प्रतीक है। इन मंदिरों में श्रद्धालु जन अपनी - अपनी मर्यादा के अनुसार परमात्मा की प्रतिमाओं को प्रतिष्ठित कर नियमित अभिषेक, पूजा- पाठ कर अपनी भक्ति प्रदर्शित करते है। इस तरह ये मंदिर पवित्र स्थल तथा धार्मिक भक्ति भावना के प्रतीक है।

जैन धर्म में जैन मंदिरों को जिनालय या देवालय कहा जाता है। इन मंदिरों को नव देवताओं में से एक माना जाता है। यहाँ जिनदेव की प्रतिमाएं विराजमान रहती हैं, अतः इन्हें जिनमंदिर या जैन मंदिर कहा जाता है। अरिहंत और सिद्ध परमात्मा जिनदेव हैं। इन्हें वीतराग देव भी कहा जाता है। जिनके राग द्वेष समाप्त हो गए हैं, जो अठारह दोषों से रहित हैं, वे वीतरागी कहलाते हैं। इन्हें सर्वज्ञ हितोपदेशी तथा सच्चा आप्त कहा जाता है। सब कुछ जानने तथा संपूर्ण पदार्थों को एक ही समय में जानने के कारण इन्हें सर्वज्ञ हित का उपदेश देने के कारण हितोपदेशी तथा आत्मा पर विजय प्राप्त करने के कारण ये आप्त अर्थात जिनेन्द्र देव कहलाते हैं। यहाँ आकर व्यक्ति जिन बिम्बों के दर्शन कर अपने परिणामों को शुद्ध करते हैं। व्यक्ति राग - द्वेष का त्याग कर निर्मल भाव रखकर आत्मा को निकट से देखने का प्रयास कर भव - बंधनों से मुक्त होने की कामना करते हैं। तीन प्रदक्षिणा देकर जन्म, जरा, मृत्यु से छुटकारा पाने तथा रत्नत्रय की प्राप्ति की कामना करते हैं। हमारे पापों का क्षय हो, दुखों से मुक्ति मिले, कर्मों का क्षय हो, सभी जीवों के प्रति सम भाव बना रहे तथा निर्मल एवं पवित्र मन बनें, इस भावना से हम सभी देवालयों में जाकर देव दर्शन करते हैं। मंदिर का शिखर देखकर हमारे भाव, शुद्ध बनने आरंभ हो जाते हैं। यह जिन मंदिर सिद्धक्षेत्रों, अतिशय क्षेत्रों के साथ-साथ उन सभी स्थानों पर पाए जाते हैं जहाँ जैन धर्मानुयायी निवास करते हैं। जैनियों के मुख्य कार्यों में देवदर्शन और पूजन को प्रमुख कर्तव्य माना गया है। मंदिरों में देव दर्शन करते समय सिर झुका कर, निस्सहि, निस्सहि निस्सहि या नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु बोलते हुए घंटी को बजाकर, हाथ जोड़कर भगवान के दर्शन करना चाहिए। लेकिन यदि पूर्व में कोई दर्शन कर रहा हो तो उसके आगे खड़े होकर दर्शन नहीं करना चाहिए न उसके आगे से प्रदक्षिणा देनी चाहिए। जो ऐसा करते हैं उन्हें दर्शनावरणी कर्म का बंध होता है, क्योंकि वह एक दूसरे के जिनदर्शन में व्यवधान उपस्थित करता है। दर्शनावरणी कर्म का प्रभाव यह होता है कि वह आगामी भव में देव दर्शन से वंचित हो जाता है।

आज मंदिरों में कई व्यक्ति लापरवाही के कारण धार्मिक मर्यादाओं का पालन नहीं करते, जो चिंता का विषय है। मंदिरों में धुले हुए पवित्र वस्त्र पहनकर जाना चाहिए। महिलाएं दर्शन करते समय सिर ढंके तथा पुरुष टोपी पहन कर जायें। यह नियम है आज पुरुषों के सिर से टोपी गायब हो गई है, कई स्त्रियां एवं लड़कियाँ जींस पहनकर खुले बालों में मंदिरों में दर्शन करती हुई देखी जा रही हैं। नवयुवक मोजे पहनकर मंदिरों में प्रवेश करते हैं तथा अभिषेक ग्रहण कर लेते हैं जो अनुचित है। कई श्रद्धालु धोती दुपट्टा न पहनकर अशुद्ध कपड़ों में पूजा करते पाए जाते हैं। जिनवाणी को यथास्थान न रखकर

कहीं भी छोड़कर चले जाते हैं। जिन व्यक्तियों को स्वस्थ होने पर नीचे बैठकर या खड़े होकर पूजा करनी चाहिए वह भी कुर्सियों का उपयोग कर रहे हैं। पूजन, भजन, स्तुति जोर-जोर से पढ़ते हैं। मंदिरों में शादी विवाह, घर गृहस्थी एवं राजनीति की चर्चा करते हैं। क्रीम, लिपस्टिक, पाउडर, नेल पॉलिश, बड़े नाखूनों के साथ मंदिरों में आकर मंदिर की पवित्रता नष्ट करते हैं। इन कार्यों से मंदिरों की मर्यादा नष्ट होती जा रही है। ऐसे कार्यों से कई प्राचीन प्रतिमाओं के अतिशय एवं चमत्कार वर्तमान में समाप्त हो रहे हैं। अतः हमें मंदिरों में देवदर्शन, पूजन करते समय विशेष सावधानियाँ रखनी चाहिए ताकि मंदिरों की मर्यादा बनी रहे तथा मंदिरों की पहचान पवित्र स्थलों के रूप में सुरक्षित रह सके।

101 वर्ष से जारी है अहिंसा यज्ञ, हमारी धरोहर-हमारी पहचान

राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद, सह सम्पादक जैन गजट

जियो और जीने दो, अहिंसा परमो धर्मः, प्राणी मात्र के प्रति दया, करुणा, सद्भावना, समानुभूति, सेवा के प्रति समर्पित हमारा जैन समाज अदभुत है, गौरवशाली है, प्रेरणादायी है, भगवान महावीर जिन्हें हम वर्तमान शासननायक भी कहते हैं, उनके निर्वाण का 2550वाँ वर्ष हम मना रहे हैं, अनेक आयोजन होंगे। इन आयोजनों के बीच मैं ऐसे कार्य की चर्चा करना चाहता हूँ जो विगत 101 वर्ष से निरंतर जारी है, जो हमारी पहचान है, हमारा गौरव है, हमारा सरताज है। ग्राम है-मारोठ, जिला डीडवाना कुचामन, राज्य है राजस्थान। जयपुर से मात्र 90 किमी की दूरी। आईये जानते हैं हमारे पूर्वजों के भाव और उनकी हृदयांगम भावना जो हमारे लिए गौरव है -

पशुशाला, गौशाला तो बहुत सुनी होंगी, पर मारोठ में है एक 'बकरशाला'

हमारा गौरव है कि प्राणी मात्र के प्रति संवेदनशील जैन समाज सर्वाधिक गौशालाएं संचालित करता है। लेकिन मैंने 'बकरशाला' पहली बार सुनी। जी हाँ, मारोठ में बकरशाला में आज भी बलि के बकरे सुरक्षित रखे जाते हैं क्यों ? 101 वर्ष पहले मारोठ में एक सेठ हुए श्री बीजराज पाण्ड्या जो एक उत्कृष्ट श्रावक के रूप में अपना जैन दर्शन अनुरुप व्यवसाय करते थे। ग्राम के भैरव मंदिर में जो अभी भी है, वहां हमारे जैनेत्तर भाई मनौती मांगते थे और मनौती पूरी होने पर भैरव मंदिर में बकरे की बलि देते थे, समाजजनों व पाण्ड्याजी की पीड़ा किसे कहें। बलि देने वाले समाजजनों से चर्चा हुई कि अपनी मनौती के लिए बकरे के प्राण लेना उचित नहीं है तो उन्होंने अपनी प्राचीन परम्परा पूर्वजों की मान्यता की बात कही। मारोठ जैन समाज के सामने श्रावक श्रेष्ठी बीजराज जी का दर्द चिंताजनक था।

बात बन गई-बकरे को हम नहीं काटेंगे, आप रख लेना, पालना

जैन समाज की भावना फलीभूत हुई और बात बन गई, अहिंसा करुणा की यह फलश्रुति हुई कि आप बकरा मत काटना हमें दे देना, हम उसे जीवन भर पालेंगे और बन गई बकरशाला। सन 1920-21 में जीवदया पालक समिति ट्रस्ट बना जो आज भी जारी है। विगत 101 वर्ष से जैनेत्तर समाज अपनी परम्परा अनुरुप बकरे को भैरव मंदिर ले जाते लेकिन उसकी बलि नहीं होती। वह सौभाग्यशाली बकरा जिसकी नियति में 'कटना' था, अहिंसक महावीर के अनुयायियों के अहिंसा भाव के कारण मारोठ में बकरे कटते नहीं हैं, पलते हैं शान से। इस क्रम में अभी तक हजारों बकरों की जान बची है व आज भी बकरशाला में बकरे अपना जीवन जी रहे हैं जिसे हम देख सकते हैं।

बिल्ली, कबूतर न पकड़ पाये इसलिए बनवा दिया पक्षी निवास

अनाज व्यवसायी समाज व श्री बींजराजजी पांडया के सामने अनाज चुगने आने वाले पक्षी कबूतर आदि को बिल्ली पकड़ का लेती। अहिंसक व्यापारियों को लगता कि हमारी दुकान के गिरे हुए अनाज के कारण कबूतर की जान जा रही है। करुणा से बनी बकरशाला के साथ ही पक्षी निवास भी बनाया गया जो दर्शनीय है। पक्षी निवास दो मंजिला पत्थर का षटकोणीय बना है, जिसमें घुमावदार सीढ़ियां

हैं। पक्षी निवास की छत पर पक्षियों को चुगने हेतु दाना डाला जाता है जिसे पक्षी चुग लेते हैं, बिल्ली नहीं जा पाती है। ये दोनों प्रकल्प मारोठ में 101 वर्ष से चल रहे हैं जो हमारी आन-बान-शान हैं।

अहिंसा कल्याणक थक न जाए - बाहुबली पाण्ड्या

जीवन के आठवें दशक में चल रहे इन्दौर के वरिष्ठ समाजसेवी श्री बाहुबली पाण्डया ने जब मुझे यह सब जानकारी दी तो रोंगटे खड़े हो गए कि हमारे पूर्वजों की महिमा निराली है वे श्री बींजराज पाण्डया के पड़पोते हैं। श्री बाहुबलीजी जिनके पूर्वज 75 वर्ष पहले मारोठ से इन्दौर आ गए लेकिन मातृभूमि के प्रति स्नेह व अपने पूर्वजों की परम्परा को चलाने का उत्साह उनके चेहरे को प्रसन्नता से भर देता है लेकिन उनकी चिंता बहुत जायज है कि कहीं यह अहिंसा कल्याणक थक न जाए। हमारे लिए चिंता की बात यह है कि -

1. 101 वर्ष पहले मारोठ में जैन समाज के घर थे 600, आज हैं मात्र 35-40।
2. जीवदया पालक समिति बकरशाला, पक्षी निवास पर प्रतिवर्ष दाना, पानी, वेतन आदि पर 20 से 25 लाख खर्च करती है।
3. इसके लिए जगह-जगह जाकर धन एकत्रित नहीं किया जाता है फिर भी जैसे-तैसे धन की व्यवस्था हो जाती है।
4. मारोठ के निवासी अपने पूर्वजों की परम्परा हेतु समर्पित हैं। भगवान महावीर की जय-जयकार करने वाले हम लोग भी अहिंसा कल्याणक पर संकल्प कर सकते हैं। अपने माता-पिता कि पुण्य स्मृति में, प्रियजनों के जन्मदिवस, विवाह वर्षगांठ आदि प्रसन्नता के अवसर पर प्रतिवर्ष जीवदया हेतु दान का संकल्प हम लें और जो भी बने 101 रुपये से लेकर 1000 रुपये तक दान करें और मारोठ की जीवदया पालक समिति को अपना योगदान अवश्य भेजें जिससे यह गौरवपूर्ण कार्य अनेक पीढियों तक जारी रह सके।

मेनका गांधी कर चुकी हैं प्रशंसा

सन 1997 में भारत सरकार में तत्कालीन कल्याण राज्यमंत्री रहीं श्रीमती मेनका गांधी ने पीपल्स फॉर एनिमल के लेटरपेड पर श्री बाहुबलीजी पाण्ड्या इन्दौर को पत्र भेजकर उक्त कार्य की प्रशंसा की है। हमारा आपका भी फर्ज बनता है कि हम मारोठ की जैन समाज को तन-मन का बल मजबूत कर धनबल प्रदान करें।

उल्लेखनीय है कि मारोठ में 650 वर्ष प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर अत्यंत दर्शनीय है साथ ही जैन मंदिरों में जो कांच का कार्य किया जाता है वह कार्य भी मारोठ के कुमावत परिवार द्वारा किया जाता है जो पूरे देश में फैला है। इन्दौर के प्रसिद्ध कांच मंदिर में भी बेल्जियम के कलाकारों के साथ मारोठ के कारीगरों ने काम किया है। मारोठ ग्राम के लोग इन्दौर में आकर बसे तो इन्दौर में जिसे आज मारोठिया बाजार के नाम से जाना जाता है वह मारोठ के लोगों के कारण ही है। मारोठ समिति को अपना सहयोग भेजने के लिए - जीवदया पालक समिति ट्रस्ट, भारतीय स्टेट बैंक, मारोठ (MAROTH) 31297 जिला डीडवाना कुचामन (राज) बैंक खाता नंबर 51071560040 IFSC : SBIN0031297 आपके द्वारा प्रेषित आर्थिक सहयोग हमारी परम्परा, गौरव को बढ़ाने में सहायक होगा। हमें विश्वास है कि अहिंसा कल्याणक अब रुकेगा नहीं।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
- श्री बाहुबलीजी पांडया
- 8989408314
।। जैनम जयतु शासनम।।

सुधा-जिज्ञासा समाधान

निर्यापक श्रमण मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज

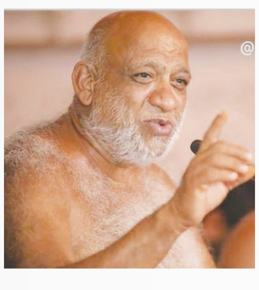

❍ भगवान के समवशरण में जीव को तीन पहले, तीन बाद के व एक वर्तमान का, ऐसे सात भव की जानकारी मिलती है। भगवान की वाणी के सम्बंध में उन जीवों की ज्यादा चर्चायें होती हैं जो पुण्यात्मा जीव होते हैं। पंचमकाल के सम्बन्ध में कहा भी होगा तो वर्तमान में इतिहास मिलता नहीं है।

❍ भौतिक नीति हमें एक सुख देगी और दस दुख देगी, विज्ञान जितनी सुख सुविधाएं दे रहा है, उससे साइड इफेक्ट ज्यादा हो रहे हैं। भगवान महावीर विज्ञान की उपलब्धियों को जानते थे लेकिन उन्होंने बताये नहीं क्योंकि धर्मशास्त्रों का नेता पिता के समान होता है, वह अपने बेटों को वही बताता है जो उसके लिए हितकारी है।

❍ व्यक्ति को प्रातः उठकर उतनी ही इच्छायें करना चाहिए कि वह शाम को खुशी-खुशी सो सके और सुबह उठे तो रिलैक्स होकर उठे, आज व्यक्ति हर क्षण अधूरा है, अतृप्त है।

❍ सत्यवान की परीक्षा होगी, होना ही चाहिए यही तो उसकी कसौटी है, यदि सोना अग्नि से डरता है तो सोना कहां से आएगा, वह अग्नि में जितना तपता है, उतना ही चोखा होता है, वह कभी जलकर राख नहीं होता। इसलिए सत्यवान को हमेशा धैर्य चाहिए।

❍ अधर्म के आलम्बन से हमें कोई सुख भी मिलता है तो हमें ठुकरा देना चाहिए और धर्म के आलंबन पर यदि हमें दुःख भी मिलता है तो हमें गले लगा लेना चाहिए, यही हमारे महापुरुषों का आदर्श है।

❍ हर व्यक्ति जेल में जाने के बाद पश्चाताप करता है, वह तो सजा के बाद ही बाहर निकलेगा। अपराध करना अधर्म है और अपराध के बाद सजा भोगना धर्म है।

❍ अतीन्द्रिय ज्ञान-जहाँ इन्द्रियाँ सब समाप्त हो जाती है, मात्र ज्ञान चेतना काम करती है।

❍ अनिन्द्रिय ज्ञान- अनिन्द्रिय का अर्थ होता है मन से। मन से जो जान लेते हैं वही सत्य हो जाता है।

❍ प्राचीन भाषा दो रही है- संस्कृत व प्राकृत इन दो भाषा में प्राचीन आचार्य ने भक्ति लिखी है उनको पढ़ने में एनर्जी बहुत होती है।

❍ लेश्या का अर्थ होता है हमारी कषाय का जो परिणाम है वह किसका नाश करना चाहती है। पेंसिल को तोड़ने का भाव आया तो मन के भाव से हमने काया को तैयार किया अतः शरीर से जब हमारा विचार व कार्य करने की प्रोसिस दोनों मिल जाते हैं तो उसे लेश्या कहते हैं।

❍ आज 99 प्रतिशत लोग धर्म को लोभ से या संकट को दूर करने के लिए करते हैं, धर्म को धर्म मानकर नहीं करते हैं इसलिए वर्तमान में धार्मिक अनुष्ठान के संस्कार लंबे समय तक नहीं रहते। सच्चा धर्मात्मा धर्म करते समय संकट भी आ जाये तब भी धर्म को नहीं छोड़ता।

❍ हमारे मन में स्वयं का व सामने वाले के हित करने का विचार है तो बाहर कुछ वाले इन रूप को कायम रखना चाहिए, अच्छे लोगों के लिए यह कला कही गयी। अध्यात्म की दृष्टि से व्यक्ति को अपने आपको नाटक का रूप लेना चाहिए। बेटा आ जाए तो आशीर्वाद देना है और पिता आ जाये तो आशीर्वाद लेना है।

❍ मन वचन काय की सरलता से अच्छा नाम कर्म बंधता है, मन वचन काय की वक्रता से बुरा नामकर्म बंधता है।

❍ सामने वाले को खुश करना भी अकर्मण्यता की कोटि में आता है, हम जिस कार्य को कर रहे हैं हमारे अभिप्राय में सामने वाले का हित होना चाहिए, अब चाहे वह प्रसन्न हो अथवा नाराज हो।

❍ जो भी दुःख किसी के ऊपर आया है वह दुःख उसने किसी न किसी को दिया है, इष्ट का वियोग है तो इष्ट का वियोग कराया होगा, अनिष्ट का संयोग है तो किन्हीं को अनिष्ट मिलाया होगा, इसे काटने के लिए निरन्तर भावना भायें -हे भगवन किसी का अनिष्ट न हो, किसी के इष्ट का वियोग न रहे।

❍ सामने वाले को खुश करना भी अकर्मण्यता की कोटि में आता है, हम जिस कार्य को कर रहे हैं हमारे अभिप्राय में सामने वाले का हित होना चाहिए, अब चाहे वह प्रसन्न हो अथवा नाराज हो।

❍ जब तीव्र पुण्य का उदय होता है तो कुंडली आदि गौण हो जाती है लेकिन इसका अर्थ निरर्थक नहीं है, इसको जरूर स्वीकार करना चाहिए।

संकलन- शुभम जैन, पृथ्वीपुर

अणुबमों से नहीं अणुव्रतों के धारण करने से विश्व में शांति संभव

पारस जैन 'पार्श्वमणि'

भारत की पावन पवित्र वसुंधरा पर समय-समय पर अनेकानेक ऋषि मुनियों, त्यागी महान दिव्य आत्माओं ने जन्म लिया है। आज संपूर्ण विश्व तीसरे विश्व युद्ध की ओर देख रहा है या यूं कहें कि विश्व का प्राणी मात्र तीसरे विश्व युद्ध की आशंका से भयभीत है। विश्व में शांति अणु बमों से नहीं अपितु अणुव्रतों के धारण करने से होगी । वर्तमान शासन नायक, जियो और जीनों दो सिद्धांत के प्रणेता, भगवान महावीर स्वामी के द्वारा बताए गए पंचशील के सिद्धांत वर्तमान समय में बड़े प्रासंगिक हैं। उनके सिद्धांत आउट ऑफ डेट नहीं हुए बल्कि आज भी अप टू डेट हैं। उन्होंने पंचशील के सिद्धांत सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अचैर्य (चोरी नहीं करना) और ब्रह्मचर्य ये बताए थे।

महावीर का ''म'' कहता है मन का संयम रहे बना,
महावीर का ''ह'' कहता है हाथ दया से रहे सना,
महावीर का ''वी'' कहता है वीतराग इंसान बने,
और महावीर का ''र'' कहता है रामकृष्ण महावीर बने।

जैन धर्म दर्शन के अनेकांत और स्याद्वाद के सिद्धांत के माध्यम से विश्व की समस्त समस्याओं का सफल समाधान किया जा सकता है। नर से नारायण, पाषाण से परमात्मा की यात्रा का मार्गदर्शन किया है। महापुरुषों के जीवन चरित्र पढ़ने और आत्मसात करने से जीवन में कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी मन को साहस मिलता है, वो घबराता नहीं है। जीवन में नव चेतना का संचार होता है।

केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने भगवान की आरती कर पालना झुलाया

राजकुमार अजमेरा, संवाददाता

झुमरीतिलैया। भगवान महावीर जन्म जयंती के अवसर पर पानी टंकी रोड स्थित जैन मंदिर में संध्या में भगवान महावीर का पालना झुलाना एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया, इस अवसर पर केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री माननीय सांसद कोडरमा अन्नपूर्णा देवी जी जैन मंदिर पहुंचीं वहां पर मंदिर का दर्शन किया, भगवान महावीर की आरती की एवं पालना झुलाया।

समाज के पदाधिकारी एवं महिला समाज की अध्यक्ष नीलम सेठी, सचिव आशा गंगवाल, प्रेम झाझंरी, सरिता काला, पार्षद पिंकी जैन ने माननीय सांसद महोदया का स्वागत अभिनंदन किया। समाज के सह मंत्री राज छाबड़ा, समाजसेवी सुरेश झाझंरी ने स्वागत भाषण दिया। इस मौके पर स्थानीय सांसद माननीय अन्नपूर्णा देवी जी ने सभी श्रद्धालु भक्तों और देशवासियों को भगवान महावीर जन्म जयंती की शुभकामनाएं दीं, उन्होंने कहा कि भगवान महावीर के सिद्धांत और आदर्शों पर चलकर ही राष्ट्र महान बन सकता है।

रात्रि में महिला संगठन के द्वारा भगवान महावीर के जीवन चरित्र पर आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम नृत्य, भजन आदि किया गया जिसमें महिला समाज की सदस्यों ने संयुक्त रूप से भाग लिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में मुख्य रूप से आशा गंगवाल, सुबोध गंगवाल, कोषाध्यक्ष सुरेंद्र जैन काला भंडारी, सुनील जैन सेठी ने अपना योगदान दिया। सामूहिक वात्सल्य भोजन में विशेष योगदान देने के लिए विनोद अजमेरा, टुन्नू, सुनील छाबड़ा, सुशील छाबड़ा की प्रशंसा की गई। समाज के मीडिया प्रभारी नवीन जैन एवं राजकुमार अजमेरा ने बताया कि भगवान महावीर जयंती के अवसर पर जैन युवक समिति के सदस्य विकास विवेक सेठी, लब्बू, अभिषेक गंगवाल, घोटू विवेक छाबड़ा, शालू छाबड़ा, दिलीप बाकलीवाल, शिखा, खुशबू, प्रियन्का, दिव्या, प्राची, नेहा, ममता आदि सदस्यों के द्वारा काली मंदिर के पास सैकड़ों गरीब जरूरतमंद लोगों को भोजन कराया गया।

ब्र. जयनिशांत जी द्वारा लंदन में जिनशासन की प्रभावना

डॉ. सुनील संचय, ललितपुर

हैरो लंदन में आयोजित वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव के मांगलिक अनुष्ठान को अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि-परिषद् के महामंत्री ब्र. जयकुमार निशांत भैया जी ने सम्पन्न कराते हुए समस्त यूनाइटेड किंगडम के श्रावकों का मनमोहा।

यह आयोजन स्व. श्री चतुर्भुज जैन, श्रीमती चन्द्रकांता जैन छतरपुर के सुपुत्र राजेश जैन, श्रीमती मीता जैन पुत्री अनन्या एवं पुत्र अरिहंत द्वारा अपने गृह निवास के नवनिर्मित गृह चैत्यालय में सम्पन्न हुआ है। मूलनायक शांतिनाथ के साथ श्री संभवनाथ, श्री सुमतिनाथ, श्री विमलनाथ, श्री अरनाथ भगवान वेदी में विराजित किए गए। इन बिम्बों की प्रतिष्ठा संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के ससंघ सानिध्य में कुण्डलपुर पंचकल्याणक में सम्पन्न हुई थी। राजेश जी की भावना थी यह महानुष्ठान ब्र. जयनिशांत भैया जी के सानिध्य में हो। भैया जी की लंदन आने की समस्त प्रक्रिया आपने तत्परता से सम्पन्न कराई। विशेषता यह रही यहाँ 3-4 डिग्री तापमान होने पर सभी बच्चों ने धोती-दुपट्टा पहनकर प्रतिदिन अभिषेक, पूजा/विधान एवं वेदी शुद्धि एवं संस्कार करते हुए पूजा का नियम लिया है। प्रतिदिन 200-300 श्रावकों की उपस्थिति रही। शुद्ध भोजन की व्यवस्था भी रखी गई। इंद्र-इन्द्राणी एवं सभी श्रावक- श्राविकाओं को यह महसूस ही नहीं हुआ कि आयोजन लंदन में हो रहा है। निशान्त भैया ने सभी को भारत के मंदिरों में होने का अहसास कराया। आपके प्रवचन के माध्यम से कई लोगों ने विभिन्न नियम अपनी क्षमता एवं सुविधानुसार लिए। भैयाजी ने हैरो के शांतिनाथ जिनालय में शास्त्र भण्डार स्थापित करने की योजना रखी जिसमें सभी ने सहयोग देने का संकल्प किया। यहाँ संचालित बच्चों की पाठशाला में अंग्रेजी के साथ हिन्दी एवं संस्कृत का अभ्यास कराया जाता है जिससे सभी प्रभुभक्ति, आरती स्तुति करके अपना कल्याण पथ प्रशस्त कर रहे हैं।

भगवान महावीर जन्म कल्याणक शोभा यात्रा का जैन राजनैतिक चेतना मंच के द्वारा भव्य स्वागत

सुमत लल्ला

नागपुर। यहां पर जैन राजनैतिक चेतना मंच द्वारा भगवान महावीर 2523वीं जन्म कल्याणक महोत्सव की शोभा यात्रा में रथ पर विराजमान श्री जी का आरती पूजन एवं शोभायात्रा में पधारे महामुनि महाराज का पाद प्रक्षालन किया। यात्रा में चल रहे श्रद्धालुओं का लल्ला निवास झंडा चौक महल नागपुर में पुष्पवृष्टि, शरबत, छाछ, जल आदि से भव्य स्वागत किया। इसमें जैन राजनैतिक चेतना मंच महाराष्ट्र अध्यक्ष श्री सुमत लल्ला जैन प्रमुख रूप से उपस्थित थे। नि:सही संस्थान के अध्यक्ष सुरेश भाउ आग्रेकर, अनिल चूड़ी वाले, प्रदीप साहकार, सुनील पेंडलकर, डॉ. जीतेन्द्र गडेकर, मनीष मांडवगडे, दिलीप गाँधी, नितिन नखाते, राजेश जैन, विजय उदापुरकर, संतोष ठेकेदार, जय जैन, पवन झांझरी मौजूद रहे। कार्यक्रम को सफल बनाने में महामंत्री डॉ. चन्द्रनाथ भागवतकर, उपाध्यक्ष नानाजी थेरे, राजाभाऊ कहते, गिरीश विठालकर, रत्नेश लल्ला, शशांक लल्ला, सुरेश डायमंड, सुनील लल्ला, सुरेंद्र लल्ला, आनंद लल्ला, नीरज लल्ला, अंशु लल्ला, नरेंद्र लालाजी, दिनेश जैन आदि का योगदान रहा। महिला मंडल की राजेश्वरी जैन, नीता जैन, सुनीता सिरसागर, उषा कहाते, किरण जैन, प्रीति मेंढे, प्रिय पोहे, नेहल कहाते, मोनिका भागवतकर, पल्लवी मांडवेकर, शांतला जैन, आस्था जैन, सुरभि जैन, माया जैन आदि ने सहयोग किया।

औरंगाबाद में निकली भव्य, दिव्य शोभा यात्रा

एम. सी. जैन

धर्म नगरी औरंगाबाद (संभाजी नगर) में 21 अप्रैल 2024 को भ. महावीर जयंती पर भव्य-दिव्य जुलूस निकाला गया। श्वेतांबर, दिगम्बर, माहेश्वरी ''सबका साथ, सबका विचार'', ''सबका अनुशासन'' यहाँ की विशेषता है। ढोल, ताशे, लेझिम पथक, धर्म नगरी चर्चा का विषय था। सारस्वताचार्य मुनि देवनंदीजी, आचार्य मुनि विभवसागर जी, आर्यिका कूलभुषण माताजी, किरणसुधाजी म. सा. इनकी प्रेरणा से उत्साह, उमंग बना हुआ था। सारस्ताचार्य मुनि देवनंदी जी ने कहा कि भ. महवीर जी के सिद्धांत सत्य, शान्ति, अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकांत सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं। इस अवसर पर राजेंद्र दर्डाजी, महावीर पाटणी, जी. एम. बोथरा, ललित पाटनी, पगारिया, विकास जैन, प्रशांत देसरडा, डी. बी. कासलीवाल, डा. प्रकाश झाम्बड, डा. राजेश पाटणी, दिनेश सेठ, दिलीप पाटणी, मुकेश साहूजी, मुगदिया, निलेश पहाडे, पत्रकार एम. सी. जैन, मीना पापदिवाल, संगीता संचेती आदि उपस्थित थे।

भ. महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव पर केंद्रीय विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में संगोष्ठी का भव्य आयोजन

भगवान महावीर के मोक्षमार्ग को समझें - प्रो. ए. आर अरावमुदान

नई दिल्ली, 19 अप्रैल 24। श्री लाल बहादुर शास्त्री केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय में दर्शनसंकाय के दर्शन परिषद तथा जैन दर्शन विभाग द्वारा भव्य संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें संकाय प्रमुख प्रो. अरावमुदान की अध्यक्षता में अनेक विद्वानों ने तीर्थंकर महावीर भगवान के जीवन और दर्शन पर अपने विचार व्यक्त किये।

संगोष्ठी के संयोजक प्रो. अनेकांत कुमार जैन जी ने संकाय प्रमुख प्रो. अरावमुदान जी तथा मुख्य वक्ता प्रो. वीरसागर जैन जी का माल्यार्पण करके स्वागत करते हुए कहा कि जैन दर्शन विभाग द्वारा प्रतिवर्ष तीर्थंकर ऋषभदेव के जन्म कल्याणक दिवस पर संगोष्ठी का आयोजन करता है किंतु दर्शन संकाय तीर्थंकर महावीर का जन्म महोत्सव संगोष्ठी के रूप में मनाकर उनका पुण्य स्मरण करता है।

संगोष्ठी में मुख्य वक्तव्य देते हुए प्रो. वीरसागर जैन जी ने बताया कि भारतीय संस्कृति उच्च कोटि की संस्कृति है तथा भारत एक त्याग प्रधान संस्कृति है जिसमें श्रेष्ठ वह नहीं जो ज्यादा जोड़ता है अपितु वह श्रेष्ठ है जो ज्यादा छोड़ता (त्याग) है।

न्यायदर्शन विभाग के प्रो. विष्णुपद महापात्र ने कहा णमोकार मंत्र के माध्यम से अपना वक्तव्य रखा। न्याय के विद्वान प्रो. महानंद झा जी ने कहा कि ''अहिंसा परमो धर्मः'' को आधार लेकर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया और अर्हत की व्याख्या की।

न्याय शास्त्र के आचार्य प्रो. रामचंद्र आचार्य जी ने ब्राह्मण और श्रमण दोनों को भारत की सनातन संस्कृति कहते हुए बताया कि यही भारतीयता है। सांख्ययोग विभाग के अध्यक्ष प्रो. मार्कण्डेय तिवारी जी ने जैन योग, जैन सिद्धांत, तथा जैन मुनि का स्वरूप बताते हुए कहा कि जैन योग का स्वरूप बहुत समृद्ध है किंतु अभी वह पूरी तरह सामने नहीं आया है। हमें महावीर के योग को व्यवहारिक बनाना होगा।

संगोष्ठी में प्राकृत विभाग की प्रो. कल्पना जैन, डॉ. विकास चैधरी तथा दर्शन संकाय के सभी आचार्य विद्वान एवं अनेक शोधार्थी और विद्यार्थी उपस्थित थे।

- रितिका पाल
शोधार्थी (जैन दर्शन विभाग)

भारतीय ज्ञानपीठ सूचना

भारतीय ज्ञानपीठ, मूर्तिदेवी ग्रंथमाला के अन्तर्गत साहित्यिक, धार्मिक विशेष तौर से जैन आचार्यों, साधुओं एवं साध्वियों द्वारा लिखित पुस्तकों शास्त्रों के प्रकाशन के लिए राष्ट्रीय स्तर पर सर्वोच्च संस्था के रूप में पिछले लगभग 75 वर्षों से स्वयं को स्थापित किए हुए है। जैन धर्म एवं श्रमण संस्कृति की धार्मिक और सांस्कृतिक सभी पुस्तकों का प्रकाशन जो उच्चतम जैनाचार्य, मुनियों द्वारा लिखी जाती रही है, एक मात्र भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा किया जा रहा है। आचार्य विद्यासागर जी महाराज द्वारा लिखित ''मूकमाटी'' पुस्तक जो विभिन्न राज्यों में पाठ्यक्रम में शामिल है, उसका विभिन्न भाषाओं में प्रकाशन भी भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा किया गया है। ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित कुछ पुस्तकों का विशेष तौर से धीवरोदयम, जैन रामायण, आर्हत जैन दर्शन और जैन न्याय प्रदीपिका दिल्ली स्थित मुख्य कार्यालय 18, इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोधी रोड, नई दिल्ली में लोकार्पण हुआ। ये सभी पुस्तकें हमारी वेबसाइट www.jnanpith.net और ईमेल sales@jnanpith.net पर उपलब्ध हैं। भारतीय ज्ञानपीठ जिसकी स्थापना साहू शान्ति प्रसाद जैन एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रमा जैन द्वारा की गई थी, वह हर वर्ष विभिन्न भाषाओं में साहित्यिक योगदान के लिए विश्व विख्यात ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान करती है। **- साहू अखिलेश जैन, मैनेजिंग ट्रस्टी**

शेष पृष्ठ 3 का

........शोभायात्रा के मार्ग में विधायक बालमुकुन्दाचार्य, ग्रेटर नगर निगम उपमहापौर पुनीत कर्णावट, पार्षद पारस पाटनी एवं व्यापारिक, सामाजिक संस्थाओं ने पुष्प वर्षा व आरती उतारकर स्वागत व सत्कार किया। श्री जी के रथ पर कैलाश - माणक - रमेश ठोलिया ने सारथी बनकर पुण्य लाभ लिया, घोड़े पर जैन ध्वज लेकर राजेश चैधरी बैठे। कार्यक्रम में आचार्य चैत्य सागर महाराज ने कहा कि भगवान महावीर के सिद्धांत सार्वभौमिक है।

कार्यक्रम में रामलीला मैदान पर आचार्य चैत्य सागर, आचार्य शशांक सागर महाराज एवं गणिनी आर्यिका विज्ञा श्री माताजी ससंघ के सानिध्य में धर्म सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में महावीर जयंती के मौके पर रामलीला मैदान में भव्य जैनेश्वरी दीक्षा हुई जिसमें आचार्य चैत्य सागर महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में ऐलक दीक्षा का भी कार्यक्रम आयोजित किया गया।

महावीर जयंती समारोह के मुख्य समन्वयक अशोक जैन नेता ने बताया कि आचार्य चैत्य सागर जी, आचार्य शशांक सागर जी, गणिनी आर्यिका विज्ञा श्री माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में दीक्षार्थी राकेश जैन ने गृहस्थ जीवन त्याग कर जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण की तथा उनका नामकरण राकेश से बदलकर ऐलक उत्सव सागर महाराज करने की घोषणा की। सर्वप्रथम दीक्षार्थी राकेश जैन ने सबसे क्षमा मांगते हुए दीक्षा प्रदान करने का आचार्य चैत्य सागर महाराज से निवेदन किया, तत्पश्चात परिजनों उपस्थित समाज बंधुओं की सहमति एवं अनुमोदना प्राप्त कर महिलाओं द्वारा चैक पूर्ण करने के बाद आचार्य श्री ने विभिन्न मंत्रोच्चारणों के बीच दीक्षार्थी का पंचमुष्ठी कैशलोंच कर ऐलक दीक्षा के संस्कार दिए, ऐलक उत्सव सागर महाराज को पिच्छिका भेंट करने का पुण्यार्जन अशोक काला, कमण्डलु भेंट करने का पुण्यार्जन सुनील-उषा पहाड़िया एवं शास्त्र भेंट करने का पुण्यार्जन चिंतामणि बज एवं अल्का गोधा ने प्राप्त किया।

कार्यक्रम में आचार्य श्री ने महावीर जयन्ती के प्रसंग पर बोलते हुए कहा कि महावीर जयन्ती का यह पावन दिवस हम सभी को भगवान महावीर जैसा बनने की प्रेरणा देता है। आचार्य शशांक सागर ने कहा कि जिसके जीवन में दया, धर्म, त्याग नहीं है, वह मानव के साथ श्रावक कहलाने के लायक नहीं है।

भारत गौरव गणिनी आर्यिका विज्ञा श्री माताजी ने कहा कि जयपुर के जैनियों को जैन धरोहर की सुरक्षा का संकल्प लेना चाहिए, आज मानव की मानवता समाप्ति की ओर है।

इससे पूर्व धर्मसभा के प्रारंभ में ध्वजारोहण प्रख्यात समाजसेवी नन्द किशोर, प्रमोद सुनील पहाड़िया ने किया, दीप प्रज्वलन प्रख्यात समाजसेवी हरिश चन्द - रेणू धाड़ूका ने किया। समारोह की अध्यक्षता प्रख्यात अन्तर्राष्ट्रीय रत्न व्यवसायी विवेक काला ने की, इस मौके पर मुख्य अतिथि प्रख्यात समाज सेवी विमल चन्द - मणी झांझरी, झांकी उदघाटनकर्ता राज कुमार - रानी टोंग्या, सम्माननीय अतिथि किशोर - सपना सरावगी, सुनील - ऊषा पहाड़िया, विशिष्ठ अतिथि समाजश्रेष्ठी विनोद - शशि तिजारिया, कैलाश चन्द माणक रमेश ठोलिया, गौरवमयी अतिथि अशोक - विमला पापडीवाल, अनिल - शशि दीवान, युवा अतिथि डॉ. लवलेश - डॉ. नीतू जैन थे।

कार्यक्रम में मंगलाचरण संत सुधासागर महिला छात्रावास की बालिकाओं ने तथा बैण्ड वादन महावीर पब्लिक स्कूल की छात्राओं ने किया। कार्यक्रम में राजस्थान जैन सभा के यशस्वी अध्यक्ष सुभाष चन्द जैन, महामंत्री मनीष बैद, वरिष्ठ उपाध्यक्ष दर्शन जैन,

उपाध्यक्ष मुकेश सोगाणी, मंत्री विनोद जैन कोटखावदा, कोषाध्यक्ष राकेश छाबड़ा, प्रमुख समन्वयक अशोक जैन नेता, पूर्व अध्यक्ष कमल बाबू जैन सहित कार्यकारिणी सदस्यों ने अतिथियों का तिलक, माला पहनाकर तथा चांदी के सोलह स्वप्न प्रतीक चिह्न भेंट कर स्वागत व सम्मान किया, अध्यक्ष सुभाष चन्द जैन ने स्वागत भाषण व संस्था की गतिविधियों की जानकारी दी।

कार्यक्रम में आचार्य चैत्य सागर महाराज, आचार्य शशांक सागर महाराज, गणिनी आर्यिका विज्ञा श्री माताजी ससंघ के पावन सानिध्य महावीर जयंती स्मारिका के 59 वें बहुरंगीय अंक का सभी अतिथियों विमोचन किया। कार्यक्रम में प्रबंध सम्पादक यशकमल अजमेरा व सम्पादक मण्डल ने सहभागिता निभाई, प्रबंध संपादक यश कमल अजमेरा ने बताया कि भगवान महावीर के जीवन चरित्र सिद्धांतों एवं जैन धर्म के ज्ञानवर्धक तथा संदेशात्मक लेखों से सुसज्जित इस स्मारिका का सभी अतिथियों ने विमोचन किया, स्मारिका का पूरा दायित्व वरिष्ठ विद्वान डॉक्टर प्रेमचंद रांवका ने निभाया। स्मारिका में आचार्य मुनिराजों, आर्यिका माताजी तथा माननीय राज्यपाल, मुख्यमंत्री, सांसद सहित अनेक राजनेताओं के गणमान्य श्रेष्ठी जनों के, प्रशासनिक अधिकारियों के शुभकामना संदेश भी प्रकाशित किए गए हैं। कार्यक्रम का कुशलतापूर्वक मंच संचालन महामंत्री मनीष बैद ने किया, मंत्री विनोद जैन 'कोटखावदा' ने आभार व धन्यवाद ज्ञापित किया, अंत में श्री जी के अभिषेक व शांति धारा की गई। कार्यक्रम में जैन गजट संवाददाता राजाबाबू गोधा ने भरी धर्म सभा में आचार्य चैत्य सागर महाराज, आचार्य शशांक सागर महाराज, गणिनी आर्यिका विज्ञा श्री माताजी ससंघ के करकमलों में जैन गजट के महावीर जयंती विशेषांक की प्रतियां भेंटकर मंगलमय आशीर्वाद प्राप्त किया तथा धर्म सभा में उपस्थित सभी पदाधिकारियों, प्रबुद्ध जनों को जैन गजट की सैकड़ों प्रतियां अवलोकन हेतु वितरण की गई जिसे सभी साधु सन्तों ने पाठकों ने पढ़कर भूरी भूरी प्रशंसा करते हुए कहा कि जैन गजट से सभी साधु सन्तों की, समाज की सारी गतिविधियां की जानकारी प्राप्त होती है। यह पेपर समाज के हर घर में पहुंचना चाहिए। इसी कड़ी में राजस्थान जैन सभा के सभी पदाधिकारियों ने, प्रबुद्ध जनों ने जैन गजट का अवलोकन कर इसका भव्यता के साथ विमोचन किया।

पुण्यशाली जीव का ही पैसा धर्म क्षेत्र में दान के रूप में लगता है

- आचार्य श्री निर्भय सागर

सागर। बहेरिया तिगड्डा सिद्गुआ पहाड़ी पर स्थित जैन तपोवन तीर्थ सागर में विराजमान प. पू. वैज्ञानिक संत आचार्यश्री निर्भयसागर जी महाराज ने धर्म उपदेश देते हुए कहा कि गुरु और प्रभु के सच्ची श्रद्धा के साथ दर्शन मात्र से अनेक जन्मों के पाप धुल जाते हैं। जैन धर्म में देव दर्शन के बिना भोजन करने का निषेध किया गया है। जिनदेव दर्शन ही मोक्षमार्ग का प्रथम सोपान है। जिसने परमात्मा के स्वरूप को जान लिया है, वही मोह को जीत सकता है और मोह को जीतने वाला ही मोक्ष सुख को प्राप्त करता है।

बाजना पुलिस की तानाशाही के विरोध में आक्रोशित जैन तथा वैश्य समाज ने एसपी को सौंपा ज्ञापन

महावीर जयंती पर अनुमति के बाद पुलिस ने नहीं निकलने दी शोभायात्रा

राजेश जैन रागी, संवाददाता

बकस्वाहा। देश की राजधानी दिल्ली के प्रगति मैदान में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी सहित जैन अनुयाई अंतिम शासन नायक 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म कल्याणक महोत्सव पूरे श्रद्धा और भक्तिभाव से मना रहे थे और भगवान महावीर स्वामी का सौ रुपए का सिक्का तथा स्मारक टिकट का प्रधानमंत्री अपने हाथों से अनावरण कर रहे थे तब बकस्वाहा तहसील व जनपद क्षेत्र की बाजना पुलिस जैन समुदाय की धार्मिक भावनाओं को ठेस आघात पहुंचाकर अपनी तानाशाही पर उतारू होकर जैन समाज द्वारा निकाली जा रही भगवान महावीर स्वामी की शोभा यात्रा को रोकने में लगी हुई थी। जैन समाज का आरोप है कि प्रशासन से मंजूरी लेने के बाद ही शोभायात्रा शुरू की गई थी और तो और पुलिस से सुरक्षा व्यवस्था भी मांगी थी जिसके एवज में बाजना पुलिस ने न सिर्फ लोगों के साथ अभद्रतापूर्ण व्यवहार किया बल्कि धमकाकर शोभायात्रा रुकवा दी। हालांकि इस सम्बन्ध में बाजना थाना प्रभारी आरक्षकों की गलती ही नहीं मान रहे हैं। क्या है पूरा मामला - 21 अप्रैल रविवार को जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का 2623वां जन्म कल्याणक महोत्सव था। चूंकि पूरे देश में लोकसभा चुनावों के चलते आदर्श आचरण संहिता लागू है। चुनाव आयोग के निर्देशों के परिपालन में एसडीएम बिजावर से बाजना पंचायती जैन मंदिर कमेटी के मंत्री बालकुमार जैन ने विधिवत अनुमति 20 अप्रैल को प्राप्त कर ली थी। 21 अप्रैल को जब विमान में श्रीजी को विराजमान कर जैसे ही शोभायात्रा मंदिर परिसर से शुरू होकर शासकीय स्कूल तक पहुंची ही थी कि बाजना थाना में

तकरीबन 8 वर्षों से पदस्थ आरक्षक गनेश अहिरवार जो थाना प्रभारी टीआई राजेश सिकरवार के साथ सीएम डयूटी में था, उसने जैन समाज के राजकुमार जैन को मोबाइल फोन पर तीन बार शोभायात्रा और साउंड सिस्टम बंद करने के लिए धमकाया। फोन पर आरक्षक गनेश अहिरवार का वश नहीं चला तो रमेश डाबर और एक अन्य आरक्षक ने पहुंचकर न सिर्फ शोभायात्रा बंद करने के लिये कहा बल्कि यह कहकर धमकाना शुरु किया कि टीआई ने कहा है कि यदि शोभायात्रा बंद ना करें तो विमान सहित सभी को थाने ले जाओ। बाजना पुलिस की तानाशाही के सामने भयभीत जैन समाज में अंततः शोभायात्रा बंद कर दी। बाजना पुलिस थाना में पदस्थ राजेश सिकरवार के मातहत अमले द्वारा महावीर जयंती के पावन अवसर पर जैन समाज द्वारा निकाली जा रही शोभायात्रा में बदसलूकी करने वाले आरक्षकों के विरोध में बाजना जैन समाज के अलावा छतरपुर जिला मुख्यालय की जैन समाज तथा वैश्य समाज ने छतरपुर समाज के अध्यक्ष अरुण कुमार जैन तथा बाजना अध्यक्ष विजय कुमार जैन के नेतृत्व में एसपी की नामौजूदगी में एडिशनल एसपी विक्रम सिंह को ज्ञापन सौंपकर बाजना पुलिस थाना में पदस्थ तानाशाह थाना प्रभारी एवं फोन पर धमकी देने वाले आरक्षक गनेश अहिरवार तथा बदसलूकी करने वाले आरक्षकों को थाना से तत्काल हटाके उनके विरुद्ध कठोरता कार्रवाई की मांग उठाई है। एडिशनल विक्रम सिंह ने बड़ामलहरा एसडीओपी से जांच कराकर दोषियों के विरुद्ध कठोरतम कार्यवाही करने का आश्वासन जैन समाज को दिया है। ये भी उठ रहे सवाल - भले ही सुप्रीम कोर्ट और मध्य प्रदेश शासन के मुख्यमंत्री द्वारा डीजे पर सख्त रूप अपनाया गया हो लेकिन निर्धारित डेसीबल से अधिक आवाज में बजाए जा रहे ब्याह शादियों और अन्य कार्यक्रम में डीजे पर प्रशासन द्वारा किसी भी किस्म का शिकंजा नहीं कसा गया है। यहां तो प्रशासन से विधिवत अनुमति लेने तथा नियमों का पालन करने के साथ-साथ एक निश्चित डेसीबल में डीजे का उपयोग किया जा रहा था इसके बावजूद भी बाजना पुलिस ने आखिर हिटलरशाही रवैया क्यों अपनाया इस बात को लेकर न सिर्फ तरह-तरह की चर्चाएं व्याप्त हैं बल्कि बुद्धिजीवी गहरे अचरज में भी हैं।

सत्य, अहिंसा, विश्व शांति के अग्रदूत, जन-जन के आराध्य, वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर स्वामी की चैत्र शुक्ला तेरस दिनांक 21 अप्रैल, 2024 को 2623वीं जन्म जयंती पर हार्दिक शुभकामनाएं

-: शुभाकांक्षी :-

त्रिलोक चंद जैन
समस्त परिवार
एन.एच. 31, किशनगंज
(बिहार) 855107
मो. 9431232017

प्रो. नलिन के शास्त्री आचार्य विद्यानंद पुरस्कार से सम्मानित

आचार्य प्रज्ञसागरजी, श्रुत सागरजी के सान्निध्य में वाचस्पति की उपाधि के साथ एक लाख रुपए का बहुमान समर्पित

राजेंद्र जैन 'महावीर', सनावद

दिल्ली। जैन धर्म दर्शन, साहित्य, शिक्षा आदि अनेक विषयों के प्रकांड विद्वान, सरलता एवं सादगी के प्रतीक, संपादक, अनेक लेख एवं शोध आलेख के लेखक, संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी, अपभ्रंश आदि भाषाओं के विशेषज्ञ, वाणी के जादूगर प्रोफेसर नलिन के. शास्त्री को आचार्य विद्यानंद जी महाराज की जन्म शताब्दी के शुभारंभ अवसर पर आचार्य विद्यानंद पुरस्कार एवं वाचस्पति की उपाधि से सम्मानित किया गया। लाल किला मैदान दिल्ली में हुए भव्य आयोजन के दौरान उन्हें यह प्रतिष्ठित पुरस्कार अंतेवासी, पट्ट शिष्य, राष्ट्र संत, परंपराचार्य श्री प्रज्ञ सागर जी महाराज, आचार्य श्री श्रुत सागरजी महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में प्रदान किया गया। 21 अप्रैल 2024 महावीर जयंती के पावन अवसर पर यह पुरस्कार उन्हें दिगंबर जैन रत्नत्रय जिन मंदिर द्वारका सेक्टर 10 नई दिल्ली द्वारा प्रदान किया गया। भारत मंडपम प्रगति मैदान में हुए भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को आचार्य श्री प्रज्ञ सागरजी महाराज ने प्रो. नलिन के शास्त्री द्वारा सृजित जैन धर्म जन धर्म की प्रथम प्रति भेंट की। उल्लेखनीय है कि प्रोफेसर नलिन के शास्त्री जैन दर्शन के मूर्धन्य विद्वानों में सम्मिलित हैं, जो पर्यावरण एवं वनस्पति विज्ञान के पूर्व आचार्य होने के साथ-साथ उच्च शिक्षा के प्रबंधन के क्षेत्र में एक परिचित नाम है। उन्होंने अपनी 50 वर्षीय साहित्य सेवा में अनेक आयामों को गढ़ा है। उन्होंने जैन दर्शन को आगे बढ़ाने के लिए अनेक कार्य किये जो युवा विद्वानों के लिए मील का पत्थर है। दिल्ली के गुरु गोविंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, बाबा साहब भीमराव अंबेडकर केंद्रीय विश्वविद्यालय लखनऊ, मगध विश्वविद्यालय बोध गया, जैन विश्व भारती संस्थान लाडनूं के कुल सचिव भी रहे हैं। वर्तमान में वे जैन विश्व भारती संस्थान मानित विश्वविद्यालय लाडनूं में कुलपति के विशेष कर्तव्य अधिकारी के रूप में अपनी उल्लेखनीय सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। प्रोफेसर नलिन के शास्त्री को मिले इस उत्कृष्ट पुरस्कार हेतु अनेक विद्वतजनों एवं समाज जनों ने बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की हैं।

चांदनगांव में भूगर्भ से प्रकटित भगवान महावीर का श्री महावीरजी फिल्म में दर्शाया अतिशय

जयपुर। दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा चांदनपुर में टीले से प्रकटित भगवान महावीर के अतिशय को फिल्म 'श्री महावीरजी' में बखूबी दर्शाया गया है। दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी के अध्यक्ष सुधान्शु कासलीवाल एवं मानद् मंत्री सुभाष चन्द जैन ने संवाददाताओं को फिल्म का निर्माण एवं फिल्म की कहानी के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि भगवान महावीर की मूंगावर्णी प्रतिमा किस प्रकार से श्री महावीरजी के चांदनगांव में भूगर्भ से प्रकटित हुई तथा भगवान के टीले से बाहर आने के बाद पूरे क्षेत्र में सुख समृद्धि संपन्नता होने लगी इस का बड़ी सुन्दरता के साथ इस फिल्म में चित्रण किया गया है।

इस फिल्म में श्री महावीर भगवान के अतिशय के साथ श्री महावीरजी कमेटी द्वारा श्री महावीरजी क्षेत्र में किए गए विकास कार्यों एवं इन विकास कार्यों से आसपास के लोगों को जो लाभ मिला है उसका चित्रण किया गया है। उन्होंने बताया कि महावीर जी मंदिर भगवान महावीर का पूरे देश का सबसे बड़ा मंदिर है। यहां सभी धर्मों एवं जातियों के लोग भगवान महावीर को पूजते हैं। नया काम शुरू करने से पहले भगवान महावीर के मंदिर में ढोक लगाते हैं। 450 वर्ष प्राचीन मंदिर के बनने के बाद महावीर जी में कोई प्राकृतिक आपदा नहीं आई। भगवान महावीर का 2623 वां जन्म जयंती एवं 2550 वां निर्वाणोत्सव चल रहा है। फिल्म में दर्शाया गया है कि आजकल के युवा गांव एवं अपने पुश्तैनी व्यापार को छोड़कर के नाम मात्र के पैकेज के लिए शहर में बस जाते हैं। इसका कारण है कि गांव के बच्चों को कोई भी अपनी लड़की देना नहीं चाहता। लड़की भी गांव में नहीं जाना चाहती है, इसी व्यथा को इस फिल्म में फिल्माया गया है। एक लड़की विदेश में बहुत बड़ी मल्टी नेशनल कंपनी में अच्छे पैकेज पर कार्यरत होते हुए भी श्री महावीर जी क्षेत्र के लिए अपना सब कुछ छोड़कर श्री महावीर जी में विकास के कारण को आगे बढ़ाने में मदद करने लगी। दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी प्रबंधकारिणी समिति द्वारा इस फिल्म का निर्माण करवाया गया है। इसके प्रोड्यूसर शैलेंद्र जैन एवं जे के जैन कालाडेरा वाले हैं। यह फिल्म शशांक जैन द्वारा लिखित एवं निर्देशित है।

फिल्म में केशव कुंडल द्वारा संगीत दिया गया है। एग्जीक्यूटिव प्रोड्यूसर सौरभ जैन है। इसमें मुख्य भूमिका रोहित मेहता व वान्या ने निभाई है। साथ में जयपुर जैन समाज के कुछ लोगों ने भी इस फिल्म में काम किया है। मूवी में सात गाने है, डॉल्बी साउंड में एरी कैमरे के साथ पूरी फिल्म फिल्माई गई है। एक घंटा पचास मिनट की फिल्म है।

राजधानी दिल्ली में महावीर जयंती समारोह धूमधाम से संपन्न

रमेश चंद्र जैन

नई दिल्ली। राजधानी का परम्परागत 102 वर्ष पुराना तीन दिवसीय महावीर जयंती समारोह लालकिला के सामने 15 अगस्त पार्क के भव्य पंडाल में आचार्य श्री श्रुतसागरजी, प्रज्ञसागरजी, सुबलसागर जी मुनिराज, मुनिसंघ एवं गणिनी आर्यिका चंद्रमती माता जी ससंघ के सानिध्य में ध्वजारोहण, चित्र अनावरण, पाद प्रक्षालन एवं स्कूली बच्चों की महावीर वंदना से शुरू हुआ। सभी संतों ने एक स्वर से कहा कि महावीर का संदेश व्यक्ति विशेष के लिए नहीं बल्कि जन-जन के लिए है। जैन समाज दिल्ली के अध्यक्ष चक्रेश जैन ने सभी संतों को विनयांजलि अर्पित करते हुए समाज को संगठित करने पर बल दिया। भगवान महावीर का 61 फुट ऊंचा पालना आकर्षण का केंद्र रहा। वर्धमान शिक्षा मंदिर दरियागंज के संयोजन में चित्रकला प्रतियोगिता में विभिन्न स्कूलों के लगभग 900 बच्चों ने भाग लिया। दूसरे दिन संतों के प्रवचन व सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। यूथ मोटिवेशनल सेमिनार में सीए अजय जैन व बिमल जैन ने सुखी जीवन के लिए फाइनेंस, फेमिली व फिटनेस में संतुलन बनाने की प्रेरणा दी। प्रधान चक्रेश जैन ने विद्यासागर जीव दया ट्रस्ट द्वारा घायल पक्षियों की सहायता के लिए चौथी निःशुल्क बाइक एंबुलेंस एवं स्मारिका का लोकार्पण किया। तीसरे दिन 21 अप्रैल को महावीर जयंती पर परम्परागत भव्य शोभायात्रा दिगंबर जैन मंदिर माडल बस्ती से अनेक झांकियों, स्कूली बच्चों, बैंड बाजों, महिला भजन मंडलियों के साथ निकाली गई। श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंदजी मुनिराज का शताब्दी दिवस समारोह भी मनाया गया जिसमें आचार्य श्री के योगदान को याद किया गया। जैन मित्र मंडल द्वारा आयोजित इस समारोह में सुभाष जैन-जज, स्वदेश भूषण जैन, मनोज जैन-निगम पार्षद, लाल मंदिर के मैनेजर पुनीत जैन, धीरज जैन, जिनेंद्र जैन, पीके जैन-कागजी, कुलदीप जैन, कैलाश चंद जैन, रमेश जैन नवभारत टाइम्स, विवेक जैन आदि का विशेष सहयोग रहा सभी को सम्मानित किया गया।

मुख्यमंत्री भजनलाल जी शर्मा ने आचार्यश्री सुनील सागर जी के दर्शनार्थ पधाकर किया पाद पक्षालन

राजेश जैन दद्दू

राजस्थान के लोकप्रिय मुख्यमंत्री श्री भजनलाल जी दिनांक 24 अप्रैल को सरवाड़ नगरी में आचार्य श्री सुनीलसागर ने गुरुराज के चरणों मे पधारे, जहां उन्होंने विनय भक्ति पूर्वक पूज्य जैन आचार्य का पाद् प्रक्षालन किया, साथ ही राज्य के सुख शांति खुशहाली की मंगल कामना के साथ गुरुदेव से आशीष पूर्वक मार्गदर्शन लिया। इस अवसर पर समाज पदाधिकारियों ने मुख्यमंत्री जी का स्वागत अभिनन्दन किया।

जैन आचार्य ने सबसे प्राचीन भाषा प्राकृत में स्व. रचित पंच तीर्थंकर व श्री राम जन्म भूमि जन्म भूमि जयदु अयोध्या स्तुति की प्रति भेंट की, जिसे देखकर, पढ़कर व पाकर माननीय मुख्यमंत्री श्री भजनलाल जी अत्यंत हर्षित हुए। आचार्य श्री ने मंगल आशीर्वाद दिया। अहिंसा रथ में विराजित भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा जी के मुख्यमंत्री जी दर्शन करते हुए आरती उतारी और कहा कि नमोस्तु शासन जयवंत हो।

मनहायम जर्मनी में भ. महावीर जन्म कल्याणक उत्साहपूर्वक मनाया गया

प्रकाश पाटनी, संवाददाता

जर्मनी के मनहायम शहर में 21 अप्रैल को प्रवासी जैन भारतीय समुदाय ने श्रमणी मलयप्रज्ञा माताजी, श्रमणी नीति प्रज्ञा माताजी के सानिध्य में भगवान महावीर का जन्म कल्याणक महोत्सव बड़े हर्षोल्लास व उत्साह पूर्वक मनाया। अंकित जैन पुत्र अनिल जैन भीलवाड़ा प्रवासी ने बताया कि जर्मनी के मनहायम शहर फ्रेंकफर्ट, म्युनिख, हैम्बर्ग शहरों व 200 किलोमीटर की परिधि में रहने वाले 200 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम के शुभारंभ में भगवान आदिनाथ, शान्तिनाथ व चौबीस तीर्थंकर की प्रतिमाओं पर अभिषेक, शांतिधारा, पूजा अर्चना की गई। इस अवसर पर मनहायम शहर के मेयर क्लाउज व काउन्सलर अमिरबशीर मुख्य अतिथि थे। मेयर क्लाउज संबोधन करते हुए कहा कि भगवान महावीर के संदेश ''जियो और जीने दो'' व ''अहिंसा परमो धर्म'' के सिद्धांतों का अनुसरण पर चलने का आह्वान किया।

इसके बाद चैबीस तीर्थंकर की प्रतिमा के साथ श्रावक-श्राविकाओं ने एक रैली का आयोजन किया। पुरुष, महिला, युवा जैन ध्वज लिए महावीर स्वामी के संदेशों के बैनर लिए हुए भजन गीत गाते हुए चल रहे थे। रैली के पश्चात बच्चों व महिलाओं ने भक्ति भाव से नृत्य कर महोत्सव के चार चांद लगाए। इस अवसर पर बच्चों को पुरस्कार वितरण कर उत्साहवर्धन किया।

यह उत्सव जर्मनी में जैन समुदाय की एकता व विभिन्न पृष्ठभूमियों के लोगों को एक साथ लाकर भगवान महावीर की शिक्षाओं और विरासत का सम्मान व अहिंसा मार्ग पर चलने की शिक्षा देता है, इस अवसर पर भारत प्रवासी बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित था। उल्लेखनीय है कि जर्मनी के मनहायम शहर में भीलवाड़ा, कोटा, जयपुर राजस्थान के कई प्रवासी वहां निवास कर रहे हैं।

समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

प्रश्न 1. गुरूजी जय जिनेन्द्र, मेरा मन चुनाव लड़ने का है, क्या मुझे राजनीति में जाना चाहिये? मैं अभी व्यापार करता हूं - विजेन्द्र जैन, यमुना नगर (हरियाणा)
उत्तर - विजेन्द्र जी, आपकी कुंडली में शनि और राहु कमजोर अवस्था में है, अतः आपको केवल और केवल व्यापार में ही ध्यान देना चाहिये।

प्रश्न 2. गुरूजी जय जिनेन्द्र, मैंने अभी दसवीं कक्षा के पेपर दिये हैं और मन पढ़ाई में नहीं लग रहा है, मैं क्या करूं - संजीव जैनी, ओखला, दिल्ली
उत्तर - संजीव जी, आपको श्री भक्तामर स्तोत्र का 6वां काव्य रोजाना यंत्र के सामने 6 बार पढ़ना चाहिये, साथ ही पन्ना रत्न का लॉकेट बुधवार को धारण करें और पढ़ाई पर ही अपना ध्यान केंद्रित रखें।

प्रश्न 3. मेरा मन हमेशा पढ़ाई को छोड़कर दूसरे कार्यों में लगता है। ऐसा मेरे साथ किस कारण से है? मैं क्या करूं? - बसंत जैन, पाली (राज.)
उत्तर - आपकी कुंडली में लग्न का स्वामी केतु के साथ बैठा हुआ है इसलिये ऐसा होता है। श्री पार्श्वनाथ चालीसा रोजाना पढ़ें, लाभ होगा।

प्रश्न 4. गुरूजी जय जिनेन्द्र, मेरी कुंडली के अनुसार मेरी राशि कौन सी है? क्या मेरी मेष राशि है? मैं बहुत कन्फ्यूज हूँ - अमित जैन, कन्नौज (यू.पी.)
उत्तर - नाम से आपकी राशि मेष है मगर आपकी जन्म पत्री में चन्द्रमा सिंह राशि में विराजमान है इसलिये आपकी सिंह राशि होती है।

गुरु जी से संपर्क सूत्र-
9990402062, 8826755078

TATA PLAY 1086 dish tv 1109 DEN 266 आदिनाथ टी वी 1217 d2h 700 airtel 842 hathway
एवं अन्य सभी टीवी केबल पर उपलब्ध
आज का राशिफल
जैन ज्योतिषाचार्य
रवि जैन गुरूजी
द्वारा आदिनाथ चैनल पर प्रतिदिन
प्रातः 06:20 बजे
दोपहर 02:15 बजे
संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतीय जैन ज्योतिषाचार्य परिषद् (पंजी.)
विवाह, मकान, व्यापार, संतान, प्रमोशन, परीक्षा, विदेश यात्रा आदि समस्याओं का समाधान जैन आगम के अनुसार प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें :
1/6991, शिवाजी पार्क, शाहदरा, दिल्ली - 32
M. 011 22325069, 9990402062, 8826755078

बड़े बाबा को 200 किलो चांदी का छत्र चढ़ाया गया

दमोह। सुप्रसिद्ध सिद्धक्षेत्र, जैन तीर्थ कुंडलपुर में युग श्रेष्ठ संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के सभी शिष्य मुनि संघ, आर्यिका संघ, कुंडलपुर में विराजमान हैं। बड़ी संख्या में श्रद्धालु भक्तों का कुंडलपुर आने का क्रम जारी है। श्रद्धालु भक्त पूज्य बड़े बाबा के दर्शन, अभिषेक, शांति धारा, पूजन कर पुर्ण्याजन कर रहे हैं। इस अवसर पर आचार्य श्री का भक्ति भाव से पूजन किया गया एवं मुनि श्री के मंगल प्रवचन हुए। बड़े बाबा के दरबार में 200 किलो चांदी का छत्र, 70 किलो चांदी का भामंडल, 65 किलो चांदी के चंवर दिल्ली के परिवार द्वारा प्रदत्त किए गए जो बड़े बाबा के दरबार में लगाए गए। मुनि संघों के विहार कुंडलपुर से होना प्रारंभ हो गये हैं।

वधु चाहिए

नाम: तरूण पांडया (सुपुत्र स्व. जुगमंदर लालजी पांडया)
निवासी: इंदौर, धर्म: जैन, जन्म तिथि: 09.10.1982,
समय: 9.55 AM, मांगलिक नहीं, रंग: फेयर, शिक्षा: 12वीं पास,
कद: 5 फुट 7 इंच, मासिक आय: 50,000/-।
कमजोर आर्थिक स्थिति वाली कन्या भी स्वीकार
संपर्क करें: (लड़के के चाचा) मो नं. 8989408314

डोलफिन वाटरप्रुफिंग

एडवांस टेक्नोलॉजी से छत को रखे वाटरप्रूफ, हीटप्रूफ, वेदर प्रूफ पायें सीलन, लीकेज एवं गर्मी से राहत व बिजली के बिल में भारी बचत करें।

छत व दीवारों का बिना तोड़फोड़ के सीलन का निवारण
For Your New & Old Construction

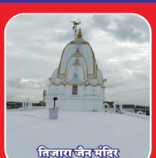
तिजारा जैन मंदिर
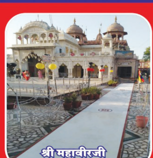
श्री महावीरजी
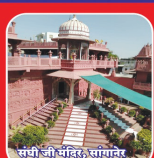
संघी जी मंदिर, सांगानेर
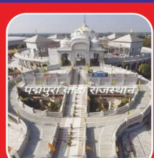

DR. FIXIT WATERPROOFING EXPERT Pidilite
Rajendra Jain
80036-14691
Dr. Fixit Authorised Project Applicator

DOLPHIN WATERPROOFING
116/183, Agarwal Farm, Mansarovar, Jaipur

जैन आचार्य श्री प्रज्ञसागर जी महाराज राष्ट्रपति भवन में

सत्यभूषण जैन

जैन समाज में यह बहुत बड़ी खुशी की बात है कि महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी ने दिगम्बर जैन मुनि, राष्ट्रसंत परंपराचार्य श्री प्रज्ञसागर जी को राष्ट्रपति भवन में आमंत्रण दिया और धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक विषयों पर चर्चाएं की। श्री प्रज्ञसागर जी ने जैन धर्म में भगवान महावीर स्वामी के मूलभूत सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला। साथ ही अपने गुरुदेवश्री विद्यानंद जी का परिचय भी कराया और बताया कि आचार्यश्री विद्यानंद जी गुरुदेव ने समाज एवं राष्ट्र को एक नई सोच, एक नई दिशा दी, जिसे सदियों सदियों तक भुलाया नहीं जा सकेगा। महामहिम राष्ट्रपति जी ने भगवान महावीर एवं पूज्य आचार्यश्री विद्यानन्द जी पर भावपूर्ण विनयांजलि अर्पित की। उन्होंने कि कहा महापुरुषों के कारण ही विश्व में शांति और सुख की अनुभूति की जा सकती है। आचार्य विद्यानंद जी के संदेश व समाज समर्पण का भाव सदा भूमंडल में जयवंत रहेगा। इस अवसर पर परमपूज्य समाधिस्थ आचार्यश्री विद्यानंद गुरुदेव जी की 100वीं जन्म जयंती शुभारम्भ का प्रतीक चिन्ह भेंट किया गया। यह महोत्सव विद्यानंद पर्व के रूप में वर्ष भर मनाया जाएगा।

सौरभ सागर वचन

अनुमान हमारे मन की कल्पना है और अनुभव हमारे जीवन की सीख

-: नमनकर्ता :-

- राजूलाल जी बैनाडा, पचाला वाले जयपुर
- श्रीमती स्नेहलता सौगानी, जयपुर
- दिनेश चन्द कासलीवाल, जयपुर
- नीरज जैन, जयपुर
- श्रीमती रत्ना जैन(सुरजमल विहार, दिल्ली)
- श्रीमती ऊषा जैन, आगरा
- रमेश चन्द तिजारिया, जयपुर
- धर्मचंद पहाड़िया, जयपुर
- कुशल ठोल्या, जयपुर
- जौहरी बाजार दिगम्बर जैन महिला समिति
- प्रदीप जैन, मेरठ
- सारिका जैन, मेरठ

ज्ञानयोगी, संस्कार प्रणेता, जीवन आशा हॉस्पिटल प्रेरणास्रोत आचार्य सौरभ सागर जी जयपुर में विराजमान है।

संकलन: R. K. Advertising शेखर पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता जैन गजट
मो - 09667168267 email: rkpatni777@gmail.com

स्वत्वाधिकारी श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचंद्र गुप्ता द्वारा हिंदुस्तान मीडिया वेंचर्स लिमिटेड, विभूति खंड, गोमती नगर लखनऊ उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर फ्लोर मिल कंपाउंड मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ 226004 उ प्र. से प्रकाशित, संपादक सुधेश कुमार जैन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

अध्यक्ष
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009

कार्याध्यक्ष
रमेश जैन तिजारिया
मोबा. 08290950000

महामंत्री
प्रकाशचंद्र जैन बड़जात्या
Mob- 09840213132

कोषाध्यक्ष
पवन गोधा
मो. 9311198985

प्रधान सम्पादक
कपूरचन्द जैन (पाटनी)
मो. 09864118950, 0 9854050969
Email- k.c.jain39@gmail.com

परामर्शक सदस्य
शिवचरणलाल जैन, मैनपुरी
मो. 09219160350
बसन्त कुमार शास्त्री, शिवाड़
मो. 08107581334

सम्पादक
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233, 9369025668
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ0प्र0)
jaingazette2@gmail.com

सह सम्पादक (मानद)
डॉ. श्री महावीर शास्त्री, सोलापुर
मो. 09422457582
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108

लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक प्रकाशक एवं मुद्रक
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344

दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, 5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर कॉम्प्लेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

जैन गजट की सदस्यता

वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से
कोरियर से मंगाने पर
अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र.
रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500

'जैन गजट' में विज्ञापन

देने हेतु सम्पर्क-
7607921391,
9415008344,7505102419
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो, समाचार, विज्ञापन आप ईमेल
jaingazette2@gmail.com
पर भेजें

नम्रता से देवता भी मनुष्य के वश में हो जाते हैं - आचार्य श्री विद्या सागर

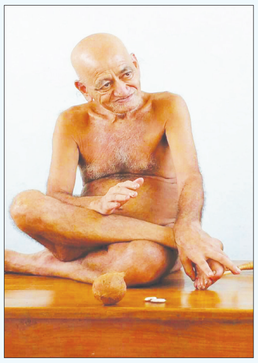

परम पूज्य प्रातः स्मरणीय सन्त शिरोमणि, आचार्य 108 श्री विद्या सागर जी महाराज

युगदृष्टा, ब्रह्माण्ड के देवता, प्राणदाता, राष्ट्रहित चिंतक, संत शिरोमणि, परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री 108 विद्यासागर जी महामुनिराज 18 फरवरी, 2024 को सल्लेखना पूर्वक समाधिमरण प्राप्त हो गये। आपके चरणों में शत-शत नमन, वंदन नमोस्तु।

अशोक पाटनी- सुशीला पाटनी

सुधान्शु कासलीवाल जयपुर

हीरालाल-श्रीमती बैनाड़ा, आगरा

दिनेश पापड़ीवाल-श्रीमती विनीता पापड़ीवाल निवासी चौमू, प्रवासी-जयपुर/अमेरिका

प्रदीप चूड़ीवाल जयपुर

नन्द किशोर पहाड़िया अक्षत बिल्डर, जयपुर

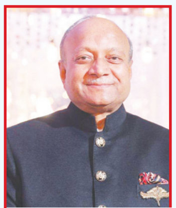

प्रदीप जैन -मीना जैन आगरा पी.एन.सी.

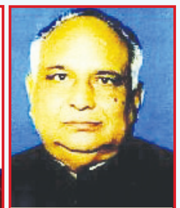

सोहनलाल सेठी जयपुर

विज्ञापन प्रेषक: R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

आपका अच्छा व्यवहार आपके जीवन का अनमोल तोहफा बन सकता है - आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज

शत् शत् नमन
शत् शत् वंदन

परम पूज्य, वात्सल्य वारिधि, पट्टाचार्य 108 श्री वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ के चरणों में

शत् शत् नमन्

-: नमनकर्ता :-

प्रकाशचन्द - सरला देवी पाटनी
निवासी सुजानगढ़ प्रवासी शिलांग

सुधान्शु कासलीवाल जयपुर

नवरतनमल श्यामनगर जयपुर (अष्टम प्रतिमाधारी)

इन्द्रमणी देवी चूड़ीवाल धर्मपत्नी स्व. आनन्दीलाल जी चूड़ीवाल निखार फैशन्स, जयपुर

राजेन्द्र कटारिया अहमदाबाद

श्रीमती रत्नप्रभा सेठी गुवाहाटी

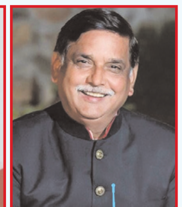

सुरेश सबलावत जयपुर

संजय पापड़ीवाल मदनगंज-किशनगढ़

महावीर बोहरा जोधपुर

प्रेमचंद सेठी मेड़ता रोड (राज.)

अशोक कटारिया (निवाई वाले)

श्रीमती इन्द्रमणी देवी बाकलीवाल, सिल्चर

श्रीमती कंचन देवी विनायक्या निवासी सीकर प्रवासी सूरत

विज्ञापन प्रेषक: R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

बहुत नहीं बहुत बार पढ़ने से ज्ञान का विकास होता हैं - आचार्य श्री प्रसन्न सागर

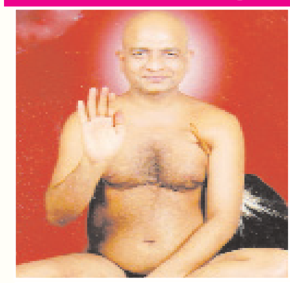

अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागर जी

शत् शत् नमन्
शत् शत् वंदन
महाराज जी श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में विराजमान हैं

भारत गौरव, साधना महोदधि, तपाचर्य, तप शिरोमणी, युवा दिव्रत की अद्भुत साधना करने वाले, दिगम्बरत्व संत समाज के एक मात्र संत, अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागर जी गुरूदेव के चरणों में शत शत नमन, वंदन, अर्चन

प्रेरणा
चन्द्र प्रकाश बैद
मदनगंज-किशनगढ़

दिलीप जैन हुमड संघपति, बड़ौदा गुजरात

मुकेश जैन पूर्व संघपति चेन्नई

राजेन्द्र कटारिया अहमदाबाद

चन्दू काला जे. के. मसाला

विज्ञापन प्रेषक: R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92

Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on Every Monday, wednesday and thursday

डाक पंजीयन संख्या :
SSP/LW/NP/115/2024-2026

If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh, Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 9415108233, 7505102419, 7607921391 Web site- jaingaztte.com email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391

To,
एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)
....
....
....

वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-, दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)

जैन गजट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।